



रिदेह  
वर्ष-1

मास-2

अंक-3

संपादकीय  
(01.02.2008)

रिदेहक एहि अंकके प्रस्तुत करैत हम हर्षित छी । एहि अंकसँ संगीत-शिक्षाक आवंभ कएन जा बहन अछि । एहि अंक मे अछि

1. शोध लेख.

3. मायानन्द मिश्रक गतिहास-द्रोह (पृ. 5सँ 9)

2. उपन्यास

1. सहस्ररौदनि (आगाँ) (पृ. 10 सँ 12)

3. महाकाव्य

1. महाभावत (आगाँ) (पृ. 13 सँ 25)

4. कथा

2. भावत बने (पृ. 26 सँ 28)

5. पद्य आगाँ (पृ. 29 सँ 48)

6. संस्कृतशिक्षा (आगाँ) (पृ. 49सँ 57)

7. मिथिनाकना-चित्रकना (आगाँ) (पृ. 58 सँ 59)

8. संगीत-शिक्षा (पृ. 60 सँ 61)

9. रानानाप्तते-2. महुरा घटैराबिन (पृ. 62 सँ 64)

10. पंजी-श्रद्ध (आगाँ) (पृ. 65सँ 68)

11. मिथिना आऽ संस्कृत-दविभङ्गी संस्कृत रिश्वरिथानयक प्रासंगिकता (आगाँ)  
(पृ. 69सँ 71)

12. भाषा आऽ प्रौद्योगिकी (कंप्यूटर, डायकन, कीबोर्ड/ठकषक तकनीक)  
(पृ. 72सँ 73)

13. बचना निखरौ सँ पहिले... आगाँ (पृ. 74सँ 75)

14. आऽ अंतमे श्ररसी येथिनक हेतु अहोरोजीमे

VI DEHA M TH I LA TI RBHU KTI TI RHUT (आगाँ) (पृ. 76सँ 83)



<http://www.videha.co.in/>

मानुषीमिह संस्कृतम्

ज्ञान जीक स्मृतिर निक पव श्रापु भेन ह्नुदा ह्नुकव ज्ञामेन एडरेस नहि भेष्टि सकन । खस्तु स्र. श्री हविमोहन मा जी पव शोध-निर्ध, ह्नुकव स्मृतिरक खन्नाव, मायानन्द मिश्रजी पव शोध नेथ समापु भेनाक उतव शुक कएन जायत । पाठक एहि सभसँ संरिधित आ' अन्त्या बचना सभ [ggajendra@yahoo.co.in](mailto:ggajendra@yahoo.co.in) आकि [ggajendra@videha.co.in](mailto:ggajendra@videha.co.in) केँ अटैचमेन्टक रूपमे .doc,.docx,.txt किंरा .pdf फॉर्मेटमे पठाव सकैत छथि ।

रिक्कीपीडिया पव मैथिली पव नेथ तँ ह्नुन ह्नुदा मैथिलीमे नेथ नहि ह्नुन,कावण मैथिलीक रिक्कीपीडियाक स्थापति नहि भेष्टेन ह्नुन । हम रँहूत दिनसँ एहिमे नागन बही,आ' सूचि करैत हर्षित छी जे 27.01.2008 केँ भाषाकेँ रिक्की शुक कवरौक हेतु स्थापति भेष्टेन छैक, ह्नुदा एहि हेतु कमसँ कम पाँच गोठे,रिभिन्न जगहसँ एकव एडिटरक रूपमे नियमित रूपेँ कार्य कबथि तखने योजनाकेँ पूर्ण स्थापति भेष्टेतेक । नीचाँ निखन निक पव जाय एडिटर कय एहि श्राजेकठमे अहाँ सभ सहयोग कवरँ, से आशि अछि । पठिना अकमे देरनागरी कौना निखू ,एहि पव हम नेथ निखने बही । गर्गनिशि कीरौडि पव ओहि तबहे निखने रिक्कीमे सेहो मैथिली निथि सकैत छी । एम. गेवार्डक माध्यमसँ श्री अशुमन पाल्दयक, जिनकव मैथिलीक हनीकोडमे स्थानक आरेदन नरिठ अछि, अन्वरोध भेष्टेन ह्नुन, ओ' सूचना मँगनहि जाहि सँ स्पष्ट, रूपसँ रँगना निपि आ' मैथिली निपिक मध्य अतव त्रात भय सकय । ज्ञ सूचना हम एम. गेवार्डक माध्यमसँ ह्नुका पठा देनियन्हि, कावण पाल्दयजी ज्ञामेन एडरेस हमवा नहि अछि । रिक्कीमे पूर्ण स्थापतिक हेतु एहि निक सभ पव बाखन श्राजेकठकेँ आँगा रँहूँ ।

[http://meta.wikimedia.org/wiki/Request\\_for\\_new\\_languages/Wikipedia\\_Maithili](http://meta.wikimedia.org/wiki/Request_for_new_languages/Wikipedia_Maithili)

<http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai>

<http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai>

<http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-most-used&limit=2000&language=mai>

अपनेक प्रतिधिया आ' बचनाक श्रतीक्षा अछि ।

नञ्ज दिग्गी

*ulhन्द्र 7f क/*

01.02.2008

© सर्वाधिकार लेखकाधीन आ' जतय लेखकक नाम नहि अछि ततय संपादकाधीन ।

रिदेह (पाक्षिक) संपादक-गजेन्द्र ठाकुर । एतय प्रकाशित बचना सभक काँपीवागठ लेखक लोकनिक नगमे बहतन्हि, मात्र एकव प्रथम प्रकाशिनक अधिकार एहि ज्ञ-पत्रिकाकेँ छैक । बचनाकाव अस्पन मौनिक आ, अप्रकाशित बचना सभ(जेकव मौनिकताक संपूर्ण उतवदायिहू लेखकगणक मध्य छन्हि) [ggajendra@yahoo.co.in](mailto:ggajendra@yahoo.co.in) आकि [ggajendra@videha.co.in](mailto:ggajendra@videha.co.in) केँ मेन अटैचमेन्टक रूपमे .doc,.docx, .txt किंरा .pdf फॉर्मेटमे पठाव सकैत छथि । बचनाक संग बचनाकाव अस्पन संक्षिप्त परिचय(रौयोडाठा) आ'



अस्पन स्कन कएन गेन ह्योठै पठैताह, से आशि करैत छी । बचनाक संग ज्ञ घोषणा बहय-जे ज्ञ बचना मौनिक अछि आ पतिन प्रकाशिनक हेतु रिदेह(पाक्षिक)-ज्ञ-पत्रिकारै देन जा बहन अछि । मेन आशु होयराक रौद यथासंभर शीघ्रतासँ (सात दिनमे) एकब प्रकाशिनक अंकक सूचना देन जायत ।

### 1. शोध लेख.

#### 3. मायानन्द मिश्रक गतिहास-रौध

श्री मायानन्द मिश्रक जन्म सहबसा जिनक रलैनिया गाममे 17 अगस्त 1934 ज्ञ.रै भेनन्हि । मैथिलीमे एम.ए. कएनाक रौद किछु दिन ज्ञ आकाशिरानी पठनाक टोपान सँ सरँफ बहनाह । तकवा रौद सहबसा कानेजेमे मैथिलीक आख्याता आ रिभागाध्यक्ष बहनाह । पहिले मायानन्द जी करिता निखनन्हि,पछाति जा कय हिनक प्रतिभा आनोचनारैक निरँध, उपन्यास आ कथामे सेहो अकठ भेनन्हि । भाई नोठा, आशि मोम आ पाखव आउव चन्द्र-रिन्दू- हिनकब कथा संग्रह सभ छन्हि । रिहाई पात पाखव , मंत्र-पुत्र ,खोता आ चिडे आ सूर्यास्त हिनकब उपन्यास सभ अछि ॥ दिशांतब हिनकब करिता संग्रह अछि । एकब अतिविज्ञ सोने की लैया माठी के नोग, प्रथम शैल पुत्री च.मंत्रपुत्र, पुरोहित आ मंत्री-धन हिनकब हिन्दीक प्रति अछि । मंत्रपुत्र हिन्दी आ मैथिली दुनु भाषामे प्रकाशित भेन आ एकब मैथिली संस्कारक हेतु हिनका साहित्य अकादमी प्रबन्धकसँ सम्मानित कएन गेनन्हि । श्री मायानन्द मिश्र अरौध सम्मानसँ सेहो प्रबन्धुत छथि । पहिले मायानन्द जी कोमन पदारनीक बचना करैत छनाह , पाछाँ जा कय प्रयोगरादी करिता सभ सेहो बचनन्हि ।



प्रस्तुत श्रद्धेयमे मायानन्द जीक 1.प्रथम शीन पुत्री च 2.मंत्रपत्र 3.पुरोहित आ 4. स्त्री-धन एहि चावि ऐतिहासिक ँपन्यास सभक आधाव पव लेखक द्वारा नगभग दू दशकमे पूर्ण कएन गेन गतिहास यात्राक समीक्षा कएन गेन अछि । एहिमे श्रद्धेय पुस्तकमे मंत्रपत्र मैथिलीमे अछि आ शेष तीनु ँपन्यास हिन्दीमे ,तथापि यात्रा पूर्णताक दृष्टी आ श्रुथनाक तावतय आ समीक्षाक पूर्णताक हेतु चाक कितारक श्रयोग अनिरार्य छन ।

कानक्यक दृष्टिसँ प्रथम शीन पुत्री च प्रथम अछि, एहिमे 1500 ँ.पू.सँ पहिलका गतिहासक आधाव लेन गेन अछि । मंत्रपत्रमे 1500 ँ.पू. सँ 1200 ँ.पू. धरिक गतिहास ँपन्यासक आधाव अछि । ँ सभ आधाव भावत ह्यक पहिलका अछि । पुरोहितमे 1200 ँ.पू.सँ 1000 ँ.पू. धरिक गतिहास अछि- एकवा त्रौणा साहित्यक ह्यक गतिहास कहि सकैत छी । स्त्रीधनक आधाव अछि सूत्र-स्मृतिकानीन मिथिना । द्वाद बचना भेन मैथिली मंत्रपत्रक पहिले - नररँव 1986 मे । प्रथम शीन पुत्री च एकव दूसानक रौद बचित भेन आ ताहिमे मायानन्द जी चाक कितारक बचनाक रूपरेखा देनछि, द्वाद ँ हिन्दीक सदर्भमे छन । एकव रौद सभठा कितार हिन्दी मे आएन । हिन्दी मंत्रपत्र आयन जाहि कावसँ तेसव पुस्तक पुरोहित किछ देवीसँ 1999 मे प्रकाशित भेन । स्त्रीधन जे एहि श्रुथनाक अंतिम पुस्तक अछि, पछिना सान 2007 ँ. मे प्रकाशित भेन । प्रथम शीन पुत्री च केव प्रस्तारनाक नाम करच छन । मंत्रपत्रक प्रस्तारनाक नाम अचानोक छन आ ँ पुस्तकक अंतमे बाखन गेन । कियेकतँ ँ लेखकक प्रथम ऐतिहासिक बचना छन, प्रस्तारनाकेँ अंतमे बाखि कय बहस आ बोयाचकेँ रँनाओन बाखन गेन । पुरोहितक प्रस्तारनाक नाम रिनियोग छन आ एकवासँ पहिले दूरस्थित मंत्र बाखन गेन जे भावतक आ रिप्यक प्रथम देशभङ्गि गीत अछि । मिथिनामे एकवा आशीर्वादक मंत्रक रूपमे श्रयोग कएन जागत अछि । स्त्रीधनक प्रस्तारनाक नाम लेखक पृष्ठभूमि बखने छथि जे ँपन्यासक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रदान कवरौक कावण सरखा समीचन अछि । मायानन्दक गतिहास-रौधक समीक्षा हम श्रुति, पवस्पा, तर्क, श्रुति आ भाषा-रिज्ञानक आधाव पव कएने छी , पाश्चा रिज्ञान सभक ँञ्जि, भोज सँ निर्मित भावतीय गतिहास-लेखन सँ रँचि कय गतिहासक समीक्षा भेन अछि, आ मध्य एशिया आ युरोपक कनियो प्रभार समीक्षा पव नही पडन अछि ।

- 1। प्रथम शीन पुत्री च- करच कपी प्रस्तारनाक रौद ँ पुस्तक 1. अग्न 2. अग्न-श्रीना 3. श्रीना- कवानी 4. कवानी- महेश 5. महेश- पावरती 6. गणेश 7. हवकिसन 8. किसन 9. हवप्पा : मोखन गँर 10. गणेश का श्रीगणेशि 11. किन्न 12. महाजन 13. मडन 14. किन्न मडन 15. मडन : मडनी 16. पतन: पूर्वदव आ 17. ँपसहाव : पनायन खडमे रिभङ्ग अछि ।



1. खगला- 2000 हजारवर्षात् पृ. सँ आबन्तु होगत अछि जा उपन्यास । खोलमे बहय रौना मनुष्यक रिरवण शुक होगत अछि- रौ एकठा दनक सराधिक रनिष्ठा मनुष्य अछि । पूरज रौ सेहो रनिष्ठा छन । एतेक बास रौचा सभक रौ । एकठा छोट आ एकठा पैघ पाखबक आरिष्काव कएने छनाह पूरज रौ । अम् दनाथाके कहन जेत छन । रौ भयंकव गंधरना पशुक नाम सेहो छन । हाथक महत्त्व रौहन आ रौहन रूष्कसँ दूबी । सर्पके मावि कय खायन नही जागत अछि, से गप पूरजसँ ज्ञात छन । प्राचीन देव रूष्क, दोसव नाग देव आ तेसव नदी देव छनाह । अम् रौसँ रौ संतान उपेन्न करैत खायन छनाह । नर फठाव आ नर काताक आरिष्काव भेन । अः आः अग अग केव देखि कय रग पशुके भागेत देखि एकव जानकावी भेन । मानुषी हनकव संख्या रूष्क करैत छनि । प्रथम मानुषीक नाम पडन खगला । ओकव मानुष-मिह छनाह अग । खगला दनाथा रनि गेनीह आ हनकव नेतृत्वमे दन उतव दिशि रौहन । हेव नेथक निथेत छथि जे पृथ्वीक उपेत्ति नगभग 200 कर्ष रर्य पूर भेन जे सरथा समाचीन अछि । कर्मकालमे एक स्थान पव रर्षन अछि- “ ब्रौह्मणे द्वितीये पवार्धे श्री म्भतरावाह कण्ठ रेरस्रत मन्त्रते अग्नारिंशितितमे कनिघणे प्रथम चवणे” आ एहि आधाव पव गणना कएना उतव 1,97,29,49,032 रर्य पृथ्वीक आघ अरैत अछि । रेडियोएकिठर रिधि द्वावा सेहो जाएह उतव अरैत अछि । यूरोपमे सत्रहम शार्द्धी तक पृथ्वीक आघ 4000 रर्य मानन जागत बहन । जावानक रिद्वान 1200 रर्य पहिले पृथ्वीक उपेत्ति मनलैह । जा दनु दृष्टिकोण रैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ हास्यास्पद अछि ।

(अनुवर्तते)

## 2. उपन्यास

### 1.सहस्ररौहनि(खागाँ)



मजदूबक ठैन आ सौममे ठैनागाड़ ी पब हुनका लोकनि द्वावा अपन कपड़ ी सुखायरी, एहि सभके देखि कय हमारा रिचनित भय जागत छनहूँ । अ देखनाक बादो जे हुनका लोकनिक मूह पब हसी छन्हि, रिना घबक बनो उतब । छोष्ट-छोष्ट रँचा सभक भीख मँगैत देखरी, हमारा सभ जखन खेनागत बहीत ओकरा सभक हमारा सभक दिशि कातब दृष्टियँ देखीअरी । लोक सभक दूकोब, कयो हमरो पब अ रिपति आरि जय तखन ? हेल दौसब का हुनका लोकनिक दिशि तकरो नही कबन्हि, त की हमरी ठा आन रँचासँ भिन्न ची आ सोचनी नागन बहत अछि । हमारा अ सोचैत बही जे जखन हमारा कोनो स्थान पब नही बहत छी तखनो त सभ कार्य गतिसँ चनेत अछि । कितारमे हमारा पढ़ ने बही जे किछ जीर जंतु मात्र दू डागमेंसनमे देखैत छथि । हमारा सभ तीन डागमेंसनमे जिरैत छे, त अ जे भूकंपक आ आन आन रिपति अरैत अछि से कोनो चाबि डागमेंसनमे कार्य कबय रँनात नही कय बहन अछि जे कम्पनातीत अछि । पाँच पागमे नानछड़ ी रँनाकेँ देखा कय रौरूजी कहैत बहथि जे देखु अहो लोकनि अपन पबिआबक गजब पाँच-पाँच पागक अ नानछड़ ी रँचि कय कए बहन छथि । पागक महत्त्व आ ओकर आरथकता जतेक रँह उँ ततेक रँहत ।

अपन, अपन रातारबक आ जीरनक बादक जीरनक, एहि सभक संग जीनाग , बातिमे रँडरँडनोग अ सभ गोष्ट कार्यक संग पढ़ ीग आ पिताक लोकबीक परेशानी सभ चनेत बहन । हमारा यादि अरैत अछि जे एक दिन भोरे-भोब एक गोष्ट ठीकेदाबक सुठकेशि पब हमब रौरूजी जोबसँ नात माबने छनाह । सुठकेशि जाय दूब खसन आ ओहिमे बाखन कपेया सौसे डिङ्गि या गेन । हमब एक गोष्ट पितियोत भाग छनाह, जे सभठा पागकेँ उँठा सुठकेशिमे बाथि रापस ठीकेदाबकेँ दय रापस कए देनखिह आ अहो कहनखिह जे जन्दीसँ भागि जाडू नहिँत पुनिसकेँ पकड़री देताह । माँ हमारा भीतबका कोठनी नय गेनीह । हमारा रँचा छनहूँ मूदा हमारा रूमरामे आरि गेन छन जे अ पाग हमारा रौरूजीकेँ गंगा-ब्रिजक ठीकेदाबक दिशिँ अपन अंजीनियरिग छोडि कय रिना कोनो भाँठक कार्य होमय देरी नय देन जयरीक प्रयास छन । रौरूजी रँहत कान धबि रँडरँड ीगत बहनाह । कख्ना कान दानिमे नून कम बहना उतब आकि आन कोनो काबसँ रँडनकेँ फेंकरीक स्वसँ देह सिहबि जागत छन । हेल किछ म्पक चूपीक बाद सभ रँचाकेँ रँजाउन जागत छन आ दूनाब मनाव होगत छन । हम रञ्जमे प्रथम अरैत छनहूँ आ पबिषाम निकनरीक दिन एकठा चाची सभ रँब नष्ठा खोअरैत छनथि । ग्व आ प्रायः आठसँ रँनन एहि नष्ठाक स्वाद ह रिंसबि नहि सकन छी । ओहि चाचीक एकठा अरुँ-पागन दियब छनन्हि जे सिताब रँजरेत बहत छन । एक रँब गंगामे स्पीमबसँ हमारा सभ ओहि पाब जाय बहन छनहूँ त ओ ओहि स्पीमब पबसँ अपन भायकेँ फेंकरी नेन उगत भय गेन छन । ओहि चाचीकेँ एकठा रँठी बहन्हि बजनी । पता नहि कोन रिमारी भेनेक, रँचाबी एनोपेथिक दरागक हेलमे उँडाउन धय नेनक । हम सभ कताक रँब हुनका देखरी नेन जागत बही । हमारा दौसबाक अहिठाम जायमे धख होगत बहय मूदा ओतय ककरो संगे पँचि जागत बही । हुनका सभ का दीदी कहैत बहियन्हि । हमब सभसँ रँड पँघ बहथि । मूदा किछ दिनक बाद हुनकब मूँ भय गेनन्हि । मूँसँ हमब मानसिक द्रुद आरि नग आरि गेन । हुनकब मूँक बादो ओ चाची अपन रँठी सभकेँ अगिना दिन स्ननक हेतु तैयाब कए पठैनन्हि जे काँनोनीक एकगोष्ट दौसब दरँग चाचीकेँ पमिना नहि पडनन्हि, आ एकब चर्चा रँहत दिन धबि काँनोनीमे होगत बहन । चाचीक भाग मूँजखफबपुब गर्शीठुँ आरुँ ठेकूँनोनीमे राख्याता बहथि, एहि काँनेजसँ हमब रौरूजी सेहो अंजीनियरिग पास कएने बहथि । ओ हाजीपुबमे गंगा-ब्रिज काँनोनी स्थित हमब सभक घब पब आयन बहथि आ अपन रँहनोगकेँ रँड हनुमति कएने



बहथि । पठना जा' कय नीक गनाज करेरोमे अस्फन बहराक कावण पागकेँ रतेने बहथिन्ह । हमबा मोनमे ग़ा रिचाव आयन बहय जे पठनामे पेघ ड़ाँकठब बहेत अछि जे मूँकेँ जीति सकैत अछि । ह्दा एक दिन हमबा सभक संग बहयरना गायक पितियोत भाय जखन पवमापु हाङ्कक चर्चा कए बहन छनाह आ' ग़ाहो जे ओहि समय पृथ्वी पब एतेक पवमापु शिम्ब रिद्यमान बहय जाहिँसँ पृथ्वीकेँ कताकरैब नष्ट कएन जा सकैत अछि, तखन हमब ग़ाहो बङ्का करच ठूँटि गेन छन ।

### 3. महाकार

### 1. महाभावत(आगाँ)

समय रीतन प्रदर्शन-शिम्बक छन आयन ।

भाँष्य पृष्ठन द्राणसँ की-की सिखाओन,  
हाङ्क-कौशिन,रूह बचना आ' शिम्बकौशिन ।

प्रदर्शनक रारस्था भेन जनक रीचहि,  
एकाएकी सभ भेनाह पवीष्कित संगहि ।  
भेन तीम-दूर्योधनक गदा-हाङ्कक प्रदर्शन ।  
भाँष्य-धृतवाष्पक हृदय-रिच रातमन्यक,  
जखन छन ह्रदकरीच अर्जुनक रैब आयन ।  
एकानेक रीण-रिद्यसँ वंगशुनी र्णजित,  
घोष अर्जुनक भेन रीचहि कर्ण आयन ।

पवशुवाम शिष्य कर्ण कएनक रिनय,  
कए छी सकैत हम प्रदर्शन सभक जे,  
रिद्य जनेत छथि अर्जुन सकन सभ,  
पारि सह दूर्योधनक ननकावा देनक,  
अर्जुन ह्रद हमवासँ नङ् से प्रथमतः ।



प्रपाचार्य कहन सावथीप्रव्र छी अहाँ,  
बाजहमावसँ द्रुंदक अधिकारी कहाँ।  
द्रुंदता नहि अहाँसँ हेलव रौत द्रुंदक,  
द्रुंद-हृदयक गप खायन ओना-कोना।

अ सुनि दुर्योधन केनक अ घोषणा,  
रौत अ अछि तँ मल सुनेत जाई,  
अंग-देशिक नृप कर्णकेँ रनरैत छी,  
योद्धाक परीक्षण करैत अछि रौत,  
अंग देशिक नृप कर्णकेँ रनरैत छी।

कहि अ अन्धकारक कएन सभागारेमे,  
अकमे नेन कर्ण भेन प्रतल ओकव।

ऊँठि अर्जुन तखन अ रौत राजन,  
हे कर्ण अहाँ जे का छी, सुनु अ,  
हम द्राण शिष्य अर्जुन अ कहय छी,  
बुँमु नहि जे अ रीवताक रवदानछी,  
नहि भेठन अछि से अहीक सभछी।

अक नहि सिखओनहि हावि मानरँ,  
प्रतिद्वंदीसँ द्रुंद कवरँ जखन चाहरँ।

कवतन धुनिसँ सभागाव भेन हेलव अँजित,  
भीष्म ऊँठि कएन संध्याक आगमन सूचित।

अर्जुनक गरौंजि सुनि कर्णक हृदय छन,  
मोन मसोसि नृप अंगक गामपव पहुँचन।

-----  
-----

शिष्टताक हेतु पाल्दर भेनाह प्रशिक्षित।  
भेन एहिसँ दुर्योधनक मोन शकित।  
शरुनि दुःशामन छन ओकव लज,  
कर्णसँ भेठेँ उतव ओ' भेन अश्रिसुत,





धृतबाह्दुरैके सभक कनहूमकीसँ त्रस्त ।

पिता छनहुँ खहाँ सिंहासनक अधिकारी,  
जन्म-अर्थताक बोकन बाजसँ खहाँकेँ ,  
हमबा तँ नहि अछि एहन नाचाबी ।

हथिप्रिबकेँ सभ मानय नागन,  
सिंहासनक अधिकारी किअक,  
अहँक सेहँता की भए पाएन,  
हनाभूत कोना अहूना अएह ।  
हथिप्रिब ज्येष्ठ हमबासँ अछि,  
पर्वत अछि अन्नज पुत्र सएह ।

कएन आग्रह जएरौक मेना,  
रावणारतक पाल्दरसँक कक ।  
ता' सुधावरँ रारस्था सभ,  
कन्याशकाबी कार्य सभसँ,  
रिसवि जायत पुत्र कंतिक,  
जन सकन हस्तुनाप्रबक ।

धृतबाह्दुरै मानन सभठौ रौत,  
आदेशे देन रावणारत जाथु,  
हंति देखि मेना-ठैना आउ ।

रिद्व भेन सार्कस्र भेद अ की,  
सचब बहरँ हथिप्रिब कहन अ ।  
रिद्वक नीति कएन सार्कस्र,  
दुर्योधनक काठन सदि प्रपच ।  
मंत्री पुरोचनसँ मिनि दुर्योधन,  
नाथक महन रैनरौने छन,  
रिद्व नगेनहि एकब पता,  
संराद सेहो पठौने छन ।  
राहक संदेशेक छन कारीगब,  
निर्माणि सुवँगक कएने छन ।  
नाथक महनक भीतब छन,  
निर्माणि से ऋणहिमे कएन ।

पाल्दरकेँ निर्देशे भेन छन,  
खोह सुवँगहिमे सूतग जाउ,



आंगिक पूर्ण शंका से छन,  
नगिते भीतवसँ रौहव आँड ।  
दृष्ट चतुर्दशिक छन ओ' दिन,  
प्ररोचन भेन से अतिशय चंचन,  
आंगि नगायत आंग ओ' सँ छन,  
हथिप्रिब छन आ सभ बूमि बहन ।

कए सचेत अपन माता-भ्राताकेँ,  
यत्र कएनहि ओहि दिन से,  
भात-भोज देनहि नगवरासीकेँ,  
पंचपत्र छनि भिननी सेहो एक ।  
कानक सोमाँ ककब चनन जे,  
सूतनि बाति ओतहि सभ तेँ ।

प्ररोचन सेहो स्वतन ओतहि,  
रौहव दिशि छन कोठनी एक,  
आंगि नगाउन भीम तखन,  
बीच बातिमे मोंका केँ देखि ।  
नाम्मागृह छन रैन से ओतय,  
अग्नि देरता अहि केब नैन ।  
घबक सुझाह होगमे नागन,  
कोनो क्षण नहि से जतय ।  
नहि रिनमि माता- भ्राता,  
प्रणाम अग्निदेरकेँ कए ।  
निकनि कंति कानक गानसँ ,  
रँचनि दूर्योधनक कचानिसँ ।

प्ररोचन अग्नि मध्य से उचिते भेन,  
संग पर्वत भिननीक नीक नहि भेन ।  
जबनि रेंचावी पत्र सहित से सूतन,  
ककरो बूमना छन नहि गेन छन ।

नगवरासी बूमनहि जे जबनि,  
कंती पाँचो पत्र सभहिक संगे ।

नगव शोकसँ भेन शोकाहन,  
थरँवि हस्तुनाप्रव जेँ गेनेँ ।  
दूर्योधन छन अति प्रसन्ना आ,  
धूतबाहुँ प्रसन्न छन योने-योने ।



पर्वतु रिद्व सभसँ रेशी प्रसन्न,  
किएकतँ सँ रूमि छन गेने ।

से ओ' कहन भीष्मकेँ सभठा,  
रात बहसक जाकय ओतय,  
भीष्मक चिंता दूब कएनहि ,  
ओ सभ गप जाय रूमि कय ।

खकारौन पहुँचेत गेनाह गय,  
पाल्दर-जन कष्ट, उठा कय ।

नारिक नारक मंग प्रतिष्ठा,  
कवि छन बहय रिकन भय ।

कहनहि रिद्व पठेनहि हमबा,  
आज्जा दी गंगतठ मेरा कवरौक ।

गंगा पाव तेनथि पाल्दर जन,  
पाछु छुठन कतेक भभठपन ।  
धृवाष्ट्रक,दुर्योधन आ' शिकनीक,  
आ' दुःशामन कर्ण सभहीक ।  
मंग म्हादा नागन प्रतिशोध,  
हस्तिनापुरबन छन ओ दुर्योग ।

-----  
---

नहि जानि जायत कतय पथ ओ,  
पथ न जतय छन ओहि रनमे,  
डेग दक्षिण दिशा दिशि दी,  
गतराक छन नहि ज्ञान कोनो ।

दैत डेग रैहतेत आगू,  
भूथन-पियामन थाकन ठेहिआयन,  
आह दूबदशो देखू ओ ।

हंतीक ओ दशो देखि,भीमसँ नहि छन गेन बहन ,  
रठ-रूम्क नीचाँ रैसा कय,चठन देखन सजग भ ।



पक्षी किङ्क दुब छन ओतय, लीम जाय पहुँचन जनाशिय,  
पानि पीरै खानि पियाओन, स्वतन सभ फन्नाय ओतय ।

लीमकेँ नहि गेन देखन, कबखि की छसि मोन होख्य,  
पोखबिक गाढक डुपब छन बाक्स नाम हिडिरी जेकब ।  
हिडिरी रहिनक संग छन, ताकि बहन खपन भोजन ।  
मनुष्य-गंध सूँघि कय, चनन नव-मास ताकिमे ओ',  
हिडिरी जे मोस-मनुष्यक, खान जन्दी ओतय जाकय ।  
देखि फंती-पुत्र संग मृतन, दुःखित हिडिरी छन ताकेत,  
लीमक छत्र-पुत्र, शरीर देखि, ठाठ नेत्रे बहनि ताकय ।

धवि धावण कप सुन्दरीक, कहन लीम जाडुँ उठाडुँ,  
खपन माता रँखुकेँ, दुब स्वस्मित हिनका पहुँचायरँ ।

मोहित छी हम खहाँ पब, चाह हमबा खँछि रिराहक,  
मायासँ हम रँचायरँ, रँनरान फ्रुब हिडिरीक याविक ।

लीम कहन हम किये उठायरँ, रँधुँ केँ स्वतन खपन,  
रँनरान खँछि हिडिरी एहन, रँन देखय हमरो तखन ।

हिडिरी पहुँचन ओतय, हिडिरी छनि सुन्दरीक कप रँनओने,  
लीमसँ कबि बहनि छनि गप, फाधसँ फाधित हिडिरीकेँ कएने ।

ओ' दौड़न हिडिरी पब यावक हेतु, लीम पकड़न रिचहिमे,  
मनुष्य पसवन ओतय से, रिकठ द्रुदक हूँकाब छन गूँजेत ।

बग्याशा भागय नागन खा' उठनि फंती-पाँडर ओतय,  
पहुँचेत गेन दौड़त ओतय, बग्यामि साजन छन जतय ।  
माबि देनक लीम तारत, भेन हिडिरी शेरकप यारत ।

लीमक रीवतासँ हिडिरी भेनि छनि ओ' खानदित,  
राकचातुर्थसँ कएने छनि फंतीकेँ शसन्न किंचित् ।  
यधिष्ठिर सेहो देन स्त्रीप्रति माता फंतीक रिचाब जानि,  
रिराह कबि कय बहय नागन, लीम हिडिरीकेँ खानि ।  
घँठेकेच उपेन भेन, पिता तुन्य पवाहय जकब छन ।

दिन रीतन पाल्दर रन छोड़ि कय खागाँ जाय नागन,  
जायरँ हिमानय दिशि पुत्रक संग ओ हिडिरी राजनि ।



घाँकेच कहन पित्तु माताक हम सदिकान संगे बहरै,  
होयत कोनो कार्य अहाँक, रँजारयमे नहि संकोच कबरै ।

जाति कान रॉस भेठैनाह फंती काननि हाफास कय,  
रॉस कहन नहि कानू दिन छोँठ पैघ होयरै कबय ।  
दूः ख कि सुखमे अपना पव नहि छोड़य अछि निर्यत्रण,  
धर्मपथ पव जे चनय ,तकरे कहय छी मन्मथा तखन ।  
गरित सुखे नहि होय, दूः खमे धैर्यक न अरनरै छोड़य,  
फंती आ' अँक पुत्र छथि,तेहन जेहन अ मन्मथा होमय ।

पाल्दरजन पारि अ संरँन, पहिबन मृगचर्म रक्कन,  
ब्रँह्मचावी केव भेष रँनाउन, एकचफ़ी नगव पहुँचन ।  
बहन रँनि अतिथि ओतय, अतिथि ब्रँह्मणक पाउन,  
भाग सब जाथि आनथि सब बाथथि माताक समझ ।  
कंती देखि आध-भीमकेँ आधमे शेष सब मिनि थाथि,  
भीमक तेयो भुख मिठैन्ह नहि भुखने ओ' बहि जाथि ।  
भुखने छनाह भीम एक दिन गेनाह नहि भिष्माँनमे,  
सुनन घोव कन्नारोहँ घबमे पृछन कावण जानन से ।  
रँकासुव बाष्कस ओतय छन नगव रँहव निराम जकव,  
बाजा अममर्थ छन बाष्कस कवए अलाचाव रँड-रँड ।  
छन निकानन समाधानजे सब परिवारसँ प्रतिदिन एक,  
कठही गाडी भवि अन्न मदिवा मोस जाथि रँहनमान ।  
रँक आगत छन सबठी भोजन संग रँहनमानहुँकेँ से,  
कन्नारोहँ मचन छन घब ब्रँह्मण परिवारक मन्था ।  
पाव छन परिवारक आग सब परिवार दूः खित छन,  
फंती कहन पाँच पुत्र अछि, भीमक रँन सुनायन ।  
भीमक रँनक चर्च सुनि-सुनि कय ब्रँह्मण मानन,  
प्रतज्ञे भेन भीमकेँ ओ'गाँड ीक संग खोह पठाउन ।  
खोह बाष्कसक तकि भीम खेनक छन ओ'भुखाएन,  
हृषु सुय भीम छन देवी सँ अहृषु रँकासुव आयन ।  
तामसे आधमण कएनक किन्तु नात-झरुा मावि कय,  
भीम प्राण जेनक ओकवा थाँचि नगव द्वाव आनि कय ।  
भेन शसन्न सब जन मनउनक पूजा- परँ ओतय,  
फंती चननीह आब किछु दिन ओहि नगव बहि कय ।  
सुनन पाँचानक सुयँरँवक, कथा पाँचानीक दुपदक,  
एकचफ़ा नगवीसँ ठेवक-ठेव ब्रँह्मण पहुँचैत ओतय ।  
पाल्दरजन नय बहन आत्रा माँह फंतीसँ बहथि,



र्यास पङ्क्ति कहन जाऊँ सूर्यरव ओतय देखय ।  
मात्रामे ऋषि द्यौम्य भेठनाह छुनाह पंडित ज्ञानी,  
रहिन खागु तखन मिनि सकल्पित भ' सभप्रणी ।  
सुनि कथा प्रशंसा यत्रसँ निकननि यात्रसेनीक,  
मञ्जुभेद कवताह जे का द्रौपदी रवण कवतीह ।  
सूर्यरवक स्थानक वस्तु तकनहि पाँचानमे जा कय,  
हंसुकावक घब देवा देनहि रिचाव फंतीक मानि कय ।  
कर्ण खायन छन दुःशामन, दुर्योधनक संग सज्जित,  
देशे-देशिक बाजा खायन छन बंगभूमि रीवसँ खचित ।  
तखन खायन द्रौपदी भाग धृष्टद्युम्नक संग सुसज्जित,  
पुष्पमान नेने खायनि केननि सभक नजबि खाप्रु ।  
रीच सूर्यरवक भूमिक डुपव मञ्जु एकठाँ नठकन,  
ओकव नीचाँ चक्र एकठाँ तीव्र गतिये छन घूमि बहन ।  
नीचाँ पानिक छह देखि जे चक्रमध्य पातव सुबकी तब,  
दागि सकत मञ्जु आँथिकेँ पुष्पमान पड़त तकरे गब ।  
सभठाँ बाजा हाबि थाकि कय भेन रिखिन थाकन छन,  
कर्ण देखि जन राजि उठन सूत पुत्र किए खायन छन ।  
द्रौपदी राजनि भेदियो देत जेँ कर्ण मञ्जु-नोचनकेँ,  
नहि पहिबायरँ रवमाना नहि कवरँ रवण ओकवारकेँ ।  
रिरशे कर्णकेँ रैसन देखि ऋषिरेशे खर्जून खायन छन,  
एकहि शिव-संधानसँ रैधन मञ्जु सुयशे पाउन छन ।  
ब्रौह्मण-मंडनी कएने छन तीषण जय-जयकाव ओतय,  
बाजा सभ कएनक शंका तेयाव खर्जून पुनि संधान कए ।  
रिहू मञ्जु भू खसन भूमि रैनवाय प्रमन आगाँ आउन,  
सभ बाजाकेँ रूमाय सुमाय छन सहठाय ओतय हठाँउन ।  
प्रुष्ट एकाँती कहन दाँडु सुनुँ ग, सुनन छन एक उबन्ती,  
रावणारत आगि रिच रचन पाँडर, रचन छनि फंती दीदी ।  
भूमि तखने उखाँरि बृह्म छन भेन ठाँह सहठि खर्जून कय,  
प्रुष्ट कहन हे दाँडु कानचक्र खननक एतय भूमि खर्जूनकेँ ।  
देखि पवाक्रम हतिसोहित भेन बाजा सभ प्रयाणकएने छन,  
पाँडर नय चननाह द्रौपदीकेँ रात्र एहिसभसँ ओ' भेनि छनि ।  
खर्जून खोनि खपन बहसु थिम्मासँ द्रौपदीकेँ कएन रिद्वन,  
धृष्टद्युम्न चपचाप सुनय छन घुमि पितारकेँ ग कथा कहनक ।  
हंसुकावक घब पङ्क्ति पाँडर कहन देखु की हमसभ खानन,  
फंती कहन खानन अछि जे सभ तकवा रौंठि पाँचू पाल्दर ।  
कहन खर्जून हे माता होयत नहि रार्थ अहाँक ग रीत,  
संग द्रौपदीक होयत रिराह पाँचू-पाल्दरक संग-साथ ।  
दुपद पठेनहि पुबहितकेँ धृष्टद्युम्नक संग ओतय,  
फंतीकेँ नोतन आ' सभकेँ नए गेन अपना संग ।  
दुपद सुनन जे पाँचू-पाल्दर कवताह रिराह द्रौपदीसँ,



तखनहि रॉस आरि सुनाउन ग्रा अछि पूर्वजन्महिक ।  
भेठैन चानहि रबदान शिरसँ जे पाँच पति अहाँ पायरँ,  
सुनि सभ द्रौपदी रिराह द्रुपद वीति रैदिक सँ कवाउन ।  
सभ किछु दिन बहन ओतय कृशीनसँ द्रुपद केब महनमे,  
पसवन ग्रा चर्चा सगरौ धवि गेन गप हस्तिनापुर महनमे ।  
लोकनाजसँ रॉस प्रसन्नता धृतवास्त्रु छन ओतय देखओने,  
मानि भौष्य-द्राणक रिचाव पठाउन समाद अग्रतओने ।  
आनी अन्नज पनौ पुतोह ओ' अन्नज पुत्र सभकेँ खादबसँ,  
दुर्योधनक कर्पक रिरोध पव कन रिचाव रिदुबकेँ रँजाकय,  
शाम्बान्नमाव रिचाव देनहि आधा बाज्य देरौक ओ' जाकय ।  
रिदुबहिकेँ पठाउन धृतवास्त्रु आनय बाजमहनम द्रुपदक,  
सभकेँ नय आनन पहुँचन ओ' जन ठाँ कवए स्वागत ।  
धृतवास्त्रु कहन हे ह्यधिष्ठिव गृह कनहसँ ग्रा नीक होयत,  
जाय खाल्दरप्रशु रँसाँ नर नगव आध बाज न' कय ।  
खाल्दरप्रशु अछि रौन एखन पहिले छन बाजाक नगवी,  
मानि ह्यधिष्ठिव गेन ओतय रँनाय नर घव द्वाव सज्जत ।  
गन्दप्रशु छन पडन नाम, आ' तेवह रर्य धवि केनहि बाज,  
यश छन सुशामनसँ आ' छन जन-जीरन अति संपन्न ।  
(अन्नरतते)

4.कथा

2.भावत बने

3. भावत बने

अपन मित्रकेँ हाँस्टनक सीढीसँ नीचाँ उतरैत हुनकव चमचम करैत जूताकेँ देखि ओकव निर्माता  
कंपनी, ब्रॉन्ड आँ मून्याक सरंधमे जिज्ञासा कएनहँ । द्वाद हभव जिज्ञासा शाँत कवरौक रँदना ओ२  
भार-रिद्वन भय गेनाह आँ एकव फ्यक रिस्तुत रिरवण कहि सुनओनहि ।

भेन ग्रा जे दिग्रीक नान किनाक पाछुमे बरि दिन भोवमे जे चोव रँजाव नगैत अछि,  
ताहिमे हभव मित्र अपन भाग्यक पवीक्षणाक हेतु पहुँचनाह । सभक द्दहसँ एहि रँजावक  
गमपोर्तेड रस्तु सभक कम दाम पव भेठरौक गप्प सुनैत बहत छनाह आँ हीन भारनासँ थस्त  
होगत छनाह, जे हुनका एहि रँजावसँ सस्तु आँ नीक चीज किनरौक नूबि नहि छन्हि । हुनकव  
ओतय पहुँचरौक देवी छनहि आँकि एक गोठे हुनकव आँथिसँ नुका कय किछु रस्तु बाँखय नागन  
आँ देखिते-देखिते निपत्ता भय गेन । मित्र महान्नभारक मोन ओम्ब गेनहि आँ ओ२ ओकव  
पाछाँ धय नेनहि आँ रँडु द्दण्डिकनसँ ओकवा तकि नेनहि । जिज्ञासा कएन जे ओ२ की नुका  
बहन अछि ।



“ ङा अहाँक रूत्राक रौहव अछि ”। चोव रँजावक चोव महाबाज रँजनाह ।

“अहाँ कछुतँ ठीक जे की एहन अन्न अहाँक कोवमे अछि” ।

माझि-पौष्टि कय रिफेता महाबाज एक जोड़ जूता निकाननहि, ऋदा ङाहो सगहि कहि गेनाह, जे ७२ कोनो सैघ गाड़ 1 रँनाक रौठमे अछि, जे गाड़ 1सँ उतवि एहि जूत्राक सही पवीक्ष्ण कवरौमे समर्थ होयत अह सही दाम देत ।

हमव मित्र रँडु घिघियेनथि तँ ७२ चाबिसय ठाका दाम कहनकहि ।

हमव मित्रक नगमे मात्र तीन सय साठि ठाका छनहि, अह दोकानदावक रँव-रँव रूत्राक रौहव होयरौक रौत सतु भय बहन छन । रिफेता महाबाज ङा धवि पता नगा नैनहि, जे फेता महाबाजक नगमे मात्र तीन सय साठि ठाका छनहि अह दस ठाका तँ ङा सबकारी डी.पी.सी. रँसक किवायाक हेतु बखरौ कवताह । से ऋह नठकणने सृष्टेठक मजरुवीके धानमे बथेत ७२ तीन सय पचास ठाकामे, जे हनकव ऋतारिक मूरे-मूव छन, अपन कनेजासँ हठा कय हमव मित्रक करेज धवि पहुँचा देनहि ।

आरँ आगाँ हमव मित्रक रँखान सुनु ।

“से जाहि दिनसँ ङा जूता आयन, एकवामे पानि नहि नागय देनियेक । कतउ पानि देखीतँ सैबके सवा देन अह एहि जूत्राके हाथमे उठा नैत छनहुँ । चाबिये दिनतँ भेन बहय, एक दिन सीह 1सँ उतरैत बही, पूवा सोन करेज जेकाँ, रौहव आँथिक सोमाँ आरँ गेन । मित्र की कछु ? का जे एहि जूत्राक रँडु 1ग करैत अछि, तँ कोरु हाँथय नगैत अछि । कोनहुना सिया-हड्ड 1 कय पाग उपव कय बहन छी । रँडु दारी छन, जे मेथिन छी अह रूधियाबीमे कोनो सानी नहि अछि । ऋदा ङा ठकान जे दिनीमे ठकेनहुँ, तँ आरँ तँ एतुक्का लोकके दन्दरते करैत बहरौक मोन करैत अछि । एहि नानकिनाक चोव-रँजावक लोक सभतँ कतेको महोमहापाध्यायके रूक्षिमे गवदामे मिना देतहि । अउ जी भावत-बने रँटैत छी, अह तखन एहि पव कँट्रारसी करैत छी । असन भावत-बने सभतँ नानकिनाक पाँडामे अछि, से एक दू ठा नहि रवन् मात्रा मे ।

हेव रँजेत बहल्लह- “ आन सभतँ एहि घँनाके नह कय किचकिचरैते बहत अछि, कम सँ कम एहि घँनाक मोनतँ अहाँ नहि पाक यौ भजाव” ।

आरँ हमवातँ होय जे हँसी की नहि हँसी । हेव दिन रौतन अह प्राथामे रँनरैत बहि गेनहुँ अगिना बरिँके चोव रँजाव आकि मीना रँजावक दर्शन कवरँ । ऋदा पता नागन जे पुनिस एहि रँजावके रँन्द कए देनक ।





## 5. पद्य

## खागाँ

### 59. आँफिसमे भवि बाति रँन्द

माँस पवन सभ उठन,  
गेन खप्पन-खप्पन घब ।  
बाँरुजी बहथि हागनमे ,  
करैत खपनारै र्यस्तु ।  
कोकिदाव नहि देनक ध्यान,  
केनक रँन्द ओहि बाति ।  
हमबा सभ चिंतित भेनहुँ,  
कएनहुँ चिंतित कछुमछ धवि प्राति ।  
भोबमे जखन दवरौन खोनि,  
देखनक हनका आँफिसमे,  
माहली माँगि गुँघायन,  
पहुँचैनक घब जन्दीसँ ।  
एक रूँढी हमब पड़ सी,  
कहनहि कोना बहन भेन,  
हमबा सभतँ नहि तकितहुँ रौँठ,  
बाति भविमे भय जयतहुँ खपछाँत ।  
रौँठा सभ नजकोठब, झँहचूक,  
छन्हि हिनक हे दाग (हमब माग) ।

हाँनीफाँस झून दवळंगामे,  
भेन छन घटित एक रौँत,  
गर्मी तातिनमे रँचार्कै,  
रँन्द कएन दवरौन ।



महिना भवि खोजरौन भेन,  
नहि चनन पता कखूक,  
स्कून खूजन देखन रँचाक,  
नहशि सभ हूजूम ।  
रौप ओकब अहचुक डन,  
स्कूनसँ जेँ रँचा नहि आयन,  
सुतने छोटि गएन तखन,  
गेन बहय पछतायन ।  
रँचा देरान पब निखने बहय,  
अपन कष्टक रँखान,  
पानि भोजन रिना,  
भेनय ओकब प्राणति ।

#### 60. नानीक पत्र

पत्र आयन मोन ठीक नहि,  
नम्मा अहाँ देखि जाऊ,  
एहि रँब नहि रँचरँ नहि,  
अ गप लुभम् रँऊ ।  
पेठक अनसब अछि खयने,  
चरँकाव सँ खाउन जेन मसला ।  
अतिम म्फा देखरौक रँडु अछि मोन,  
चिष्टी निखरौने अयनाह तेहला ।



क्या नहि पहुँचैनकन्हि नम्झीकेँ,  
कहन चिष्टीमे खँछि भावभास कएन,  
एक खाव चिष्टी खाएन जे,  
माय गेनीह देह छोट्ठा ।  
नम्झीक रैठौ लौकावि पावि कानय,  
कहनक छी हम सभ खसहाय ।

नहि खयतीह हमब नम्झी,  
मायक झूह देखय खँतिम रैब,  
नाम बठैत खँताँक ग़ा रूँडाँ ,  
ग़ुजवि गेनि जग छोट्ठा ।  
खपन घबक हान की कछ,  
भगराने छुथि सहाय,  
घबघुम्सू सभ घबमे खँछि,  
दैर ध्रुपा हे दाय ।

#### 61. केराड रँन्द

रौहबसँ खँरयमे भेन नेठ,  
छोट्टे भाय कएन केराड रँन्द,  
किछ कानक रौद जखन खँजुन,  
भैय्या कहन हे खँनज,  
दूः खी छी हम पाँडाँ ग़ा मोन,  
खँहिना जखन छनहुँ हम सभ रँचा,  
पिता कएनन्हि घब रँन्द ।  
कनेक देवी होयराँक कावण,  
पुछनन्हि नहि ओ' त्रुवत ।  
त्रुवत काका सेहो रूँमाओन,  
रौन रिज्ञानक द्रुद,  
जे भेन से रिंसवि शुक,  
कक नर जीरन स्राँडद ।

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका १ फरबरी २००८ (वर्ष 1 मास 2 अंक 3)

बिदेह' पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह विदेह Videha बिदेह



<http://www.videha.co.in/>

मानुषीमिह संस्कृतम्

## 62. जेठशि

छोठ भायकेँ देन पवती,  
खा बाखन सेहो जेठशि,  
मबन जखन कनियाँ तखन,  
भोजक कएन बृतांत ।  
कहन नमहव भोज कव,  
पाग नहि तकव न रँहला ।  
जकरे कहँय से दय देत,  
चीनी चाँडव सनहाना ।  
खेत रँचि कय हम कएनहँ,  
श्राँह पितक ओहि रँव ।  
खपना रँवमे नहि चनत रँहला,  
हँव रँमू एक रँव ।



63. सादा आकि बंगीन

बूँनेक एल्ल ह्नागठक गेन जमाना,  
सादा कि बंगीन ।  
दबिभंगा कानी मंदिर नगक,  
नस्मी रैनाक आ मेथ-मीन ।  
जखन बूँमि नहि सकनहुँ,  
तखन कहन एकगोठ मीत,  
सादा भेन सादा आ  
भागक संग भेन बंगीन ।

64. गंगा ब्रिज

यादि खरैत खडि मजूव सबक मूँ,  
चक्रवि खाति खसत नीचाँ पानिमे,  
पचास ठाँ मूँमे सँ दस ठाँक भेन बिपोरुँ,  
चानीस गोठेक कमपेनसेसन गेन खाय,

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका १ फरबरी २००८ (वर्ष 1 मास 2 अंक 3)

बिदेह' पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह विदेह Videha बिदेह



<http://www.videha.co.in/>

मानुषीमिह संस्कृतम्

नेता ठीकेदाव था' अफसव ।

एहि खूनीमा ब्रिजक हम गर्जनीयव,  
कहेत छी हमवा ग्रमानदाव,  
घूस कोना नैन होगत छैक ककरो,  
देखेत गनेत ग्रा मभ यो सबकाव ।

65. दबिद

आठ मय रीघा खेत,  
कतेक पोखवि चास-रौस ।  
झुदा कानक गति रेंचि रिकनि,  
मनमावपुवसँ धोती कीनि,  
घुरेत कान देखन माँच ।  
धोती घुवा कय खानन,  
आ' कीनन माँछ,पूडन,  
हो माछ ग्रा कान्हि कतय भेठेत,  
धोतीतँ जखने पांग होयत,  
जायरँ कीनि नायरँ तुवत ।

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका १ फरबरी २००८ (वर्ष 1 मास 2 अंक 3)

बिदेह' पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह विदेह Videha बिदेह



<http://www.videha.co.in/>

मानुषीमिह संस्कृतम्

दविदताक कावण हम थारुँ बुँमि गेन छी,  
एक दिनुका गप नहि ,सभ दिनुका चबित छी ।

66.रौह नहि लैन

हँ यो लैन खछि अ,  
अदा शिवक लोक की बुँमय,  
सभ ताकेत खछि रौह,  
लैन कहँय तँ का नहि कीनय ।

छागव खस्सी था रँकवीक,  
अतव जेँ जायँ हविछारँय,  
रिकायत किछ नहि रिँनु ठाका,  
एहि नगवमे किछ नहि थारँय ।



67. जूताक आरिष्काव

जखन गङ्गन एक काँठ,  
बाजा कहनक ओछाँड,  
रैना माँठिक हम्ब ग्रा,  
बाजधानी निष्कंठक रैनाडु ।

जखन सभठा चर्म आनि कय,  
नहि कए सकन ओछाँउन,  
एक चर्मकाव आउन आ,  
बाजाकेँ हबिडाय रूमाउन ।  
पैव रौन्हि नी चर्मसि आकि,  
पृथ्नीकेँ न्माँपी ओहिसँ,  
निष्कंठक धवती नहियोतँ,  
माँत्रा निष्कंठक होयत ।





68. जोकही पोखविमे भवि बाति

सुनेत छनहुँ जे रँडरँडि यारौरुँ साहेरँक,  
नगान देनामे जेँ होगत छन नेठ ।  
भवि बाति ठाँह कएन जोकही पोखविमे,  
रौतन हग अघनाह फेब जखन हाथी पब,  
नेरौक हेतु नगान-नहना जहिना,  
गावि-गूवि दैत हाथी पब, छूठन,  
ठैनक-ठैन, झूठ दसना,  
जमीनदाबी खतम भेलो पब सोचन,  
किहु नी असूनि,  
झुदा नोक सभ बुधियाबी कएन,  
नहि अघनाह ओ' घुबि ।

69. गैस सिनिलुबक चोबि



गेनहूँ वपठ निखारिय,  
भेन छन सिनेलुबक चोबि ।  
मोछ रना थानेदाव रजनाह,  
रूबि रूमैत छी हमबा सभकेँ,  
डरन सिनेलुब चाली,  
एह. खाग. खाव. सस्ता नहि,  
खुछि एतेक हे भाग ।  
हम कहन डरन सिनेलुब,  
तँ खुछिये हमबा, खुछा तँ  
तेसब सिनेलुब नेरौक खुछि देवी ।  
तकन कतय चोबकेँ खुछाँ,  
खुछाँक तकनाग खुछि जेना,  
चैत खुछि कोलुक रबद ।  
भवि दिन घुमेछ नहि रहुँछ,  
एको डेग, खुछै नहि कक सह,  
प्रगतिक नाम पव एहि रैब ।  
सूठबक चोबिक रैब कहनक,  
गुआरेसक पाग चाली,  
कछु खुछाँसँ कोठमे भ' पायत,  
देन खुछाँसँ गरौली ।  
हेवी पङ्गि जायत खुछाँकेँ,  
पुनः कोठमे जायरँ,  
ऊनठा निर्णयो भ' जायत,  
रूमि हेव से खायरँ ।  
संग गेन द्रागुरव कहनक लोकबी,  
छेक एकबे ठीक,  
पागयो खुछि कमागत कवि,  
बंगदारी, हेकैत पानक पीक ।

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका १ फरबरी २००८ (वर्ष 1 मास 2 अंक 3)

बिदेह' पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह विदेह Videha बिदेह



<http://www.videha.co.in/>

मानुषीमिह संस्कृतम्

70. खैल्ल

खैल्लकठवी पडूँचि कहन,  
कक मर्च रावँठे पव सागन,  
मानिक कहन ककु किड कान धवि,  
खैल्लन कवय छी आग ।  
ध्रुसिखवक आँडव आयन,  
बिनीरिङ्गक संगहि,  
खरुसव निकनन ओतयसँ,  
रावँठे रिना एकक्यूँठे केनहि ।

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका १ फरबरी २००८ (वर्ष 1 मास 2 अंक 3)

बिदेह' पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह विदेह Videha बिदेह



<http://www.videha.co.in/>

मानुषीमिह संस्कृतम्

71.रूँढ रव

कतय छी आयन आग,  
ताकि बहन छी रव,  
20-20 रवथक दूँठा,  
अच्छि कतह् अलडन ।  
बंग सिनेरी सिंघ अठिया,  
अदंत तकैत छी अहाँ,  
से भेँठैत कहिया ।  
की चाली एकठाँ पौघ,  
20-2- केव दूँ गौँठक रँदना,  
40 केव जौँ एकठाँ,  
नय नी तँ छी हम तैयारे,  
काज खतम करु सलठाँ ।

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका १ फरबरी २००८ (वर्ष 1 मास 2 अंक 3)

बिदेह' पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह विदेह Videha बिदेह



<http://www.videha.co.in/>

मानुषीमिह संस्कृतम्

72. लौकव

फोन कवि कय घबमे पूछन,  
छथि फनना घबमे थाकि,  
आगू पद्धितथि ओ' रूखजनाह,  
दय कय एक धूतकावी ।  
एहि फोनक हम रिन भरोत छी,  
नहि कक अहाँ पनः रात,  
मैसेज अहाँक देर हम प्रवर्के,  
से छी के अहाँ नाँ ?  
लौकव नहि अहाँक ले छी,  
से हम अपन प्रवक,  
कनिया कहि छी छी हम लौकव,  
रूँमूँ ग्रा यो अहमव ।

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका १ फरबरी २००८ (वर्ष 1 मास 2 अंक 3)

बिदेह' पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह विदेह Videha बिदेह



<http://www.videha.co.in/>

मानुषीमिह संस्कृतम्

73. कनासमे खरौज

दनु दिशेक रौचकेँ उठाकय प्छनहि,  
खायन कौन कातसँ खरौज ।  
पकड़न एक कातकेँ छोड़न,  
हेब कएन दू हारि ।  
खाधक-खाध करैत पहुँचनाव,  
हेब जखन नग नम्मा,  
दूग गोष्ट मध्य जानि नहि सकनाव,  
खरौज केनक कौन रसे ।  
रैगिगमे सेहो खहिना कए,  
सभकेँ कहन उठि जाडु,  
जखन का नहि उठन कहन,  
खहाँ खहाँ खहाँ एकाएकी उठैत जाडु ।

(खन्नरतते)



## 6. संस्कृतशिक्षा (खागाँ)

।।.

गति भ्रंतः सर्गे पूर्वतन् पाठेर ज्ञातरंतः । संस्कृतेन प्रथम पविचयः प्राप्तराः । खद्य  
खण्डनक्रमेण खपि पविचयस्य खण्डयाम् खपि खण्डसं रयं कर्मः ।

खठं गजेन्द्रः । भ्रान् कः ।  
खठं शिक्षकः । भ्रती का ।  
खठम् खभिनेत्री ।  
खठं छात्रा ।  
खठं रैद्यः ।  
खठं गृहिणी ।  
खठं प्रथकः ।  
खठं शिक्षिकाः ।  
खठं पाचकः ।  
खठं तंत्रज्ञः ।  
खठं तंत्रज्ञा ।

एतद् राकाद्वयं योजयिन्ना रयं पविचयं रदामः । एतेर सुखेन पविचयं रदामः । मम नाम  
गजेन्द्रः । खठं शिक्षकः ।  
एतेन क्रमेण भ्रंतः रदंतु ।  
भ्रान रदंतु ।  
मम नाम गृध्रेश्वरः । खठं तंत्रज्ञः ।  
मम नाम बाजनम्माः । खठं खभिनेत्री ।  
सः उदयनः । सः छात्रः ।  
सः छात्रः रा ।  
खाम् । सः छात्रः ।

तत्र प्रश्नफलकम् रा ?  
खाम् । तत्र प्रश्नफलकम् ।  
न । सः रैद्यः न ।  
एतत् फेनकम् रा ।  
खाम् । तत्र उपनेत्रम्/कर्मतम् ।  
प्रशान्तिः सज्जनः रा ।  
संस्कृतं सवर्णं रा ।

संस्कृतं मधुवं रा ।



श्राम् । सलम् ।

अदानीम् अहं रदामि । भरंतः अपि अन्नियं करंतु ।

उत्तिष्ठतु । तस्य नाम उदयनः । तस्य नाम किम् ।

कस्य नाम अर्दुशेखवः ।

तस्याः नाम चन्द्रिका ।

तस्याः नाम किम् ।

कस्याः नाम चन्द्रिका ।

एतस्य नाम अर्दुशेखवः ।

तस्य नाम किम् ।

साधुः ।

तस्याः नाम श्रीनम्ब्याः ।

कस्याः नाम श्रीनम्ब्याः ।

तस्य नाम अर्दुशेखवः ।

एतस्य नाम सुधीवः ।

तस्याः नाम शीतना ।

एतस्याः नाम बाजनम्ब्याः ।

घटी । सुधीवस्य घटी ।

कस्य ह्नुथम् ।

सुधीवस्य उपनेत्रम् ।

नाशिका ।

कर्णः ।

गीतायाः घटी ।

गीतायाः घटी ।

गीतायाः सूतः ।

कस्याः कवरम्ब्रम् ।

ददातु ।

कस्याः कश्चिका ।

सीतायाः । नतायाः ।

सा देरी । देर्याः नाम किम् ।

देर्याः नाम सबस्रती ।

कस्याः आभूषणम् ।

नर्तक्याः आभूषणम् ।

कस्याः कर्णहवः ।

गृह्याः कर्णहवः ।





पार्वती ।  
पार्वतीः ।  
पुस्तकस्य नाम श्रीमदभागवतगीता ।  
कारास्य नाम अतिज्ञानशोकं तनम् ।  
अस्माकं देशस्य नाम भावतम् ।  
शिक्षकस्य नाम विश्वासः ।  
गीतायाः ।  
प्रियायाः ।  
बाजेस्त्रिवयाः ।  
श्रीनक्षत्र्याः ।  
वामः अस्ति । सर्वे वामस्य रदन्ति ।  
द्वन्द्वस्य । प्रमोदस्य ।  
बाबूनास्य ।  
वमानन्दस्य ।  
वामशेषस्य ।

वाधेष्टामस्य ।  
शिक्षकस्य ।  
लेखकस्य ।  
द्वन्द्वस्य ।  
हनस्य ।  
पुष्पस्य ।  
मन्दिवस्य ।  
नगवस्य ।  
सीतायाः ।  
बाधायः ।  
अनितायाः ।  
मानरिकायाः ।  
करितायाः ।  
सुशीलायाः ।  
गङ्गायाः ।  
शिवदायाः ।  
भावताः ।  
नद्याः ।  
लेखन्याः ।  
वाथ्याः ।  
अरुण्यः ।  
वामस्य ।  
वामः दशवथस्य पुत्रः ।



द्वन्द्वः कस्य पतिः ।  
द्वन्द्वः रसुदेरस्य पतिः ।  
वामः कस्याः पतिः ।  
वामः सीताय १ : पतिः ।  
नक्षत्राः उर्मिनायाः पतिः ।

द्वन्द्वः ककमणाः पतिः ।

दिग्गी भावतस्य बाजधानी ।  
रैर्द्वन्द्वक कण्ठिकस्य बाजधानी ।  
रौन्ध्रिकः वामायणस्य लेखकः ।  
र्यासः महाभावतस्य लेखकः ।

रयम् गदानीम् एकम् अन्त्यासं कर्मः । अहम् एकं कौशिकं दर्शयामि । सर्वे अन्त्यासः कर्मः ।  
दशवथस्य पतिः वामः ।  
शिरस्य पतिः गणेशः ।  
वारणस्य पतिः मेघनादः ।  
अर्जुनस्य पतिः अन्धिमनूः ।  
वर्गुर्णस्य लेखकः कानिदासः ।  
वामायणस्य लेखकः रौन्ध्रिकः ।  
सीतायाः पतिः वामः ।  
उर्मिनायाः पतिः नक्षत्राः ।  
मन्त्रामायाः पतिः द्वन्द्वः ।  
पार्वलाः पतिः ।  
देरक्याः  
मन्दादवयाः  
दमयन्तः  
गान्धी महाभागस्य महोदयस्य  
रेणु महोदयायाः  
मेरी महाभागयाः

### स्वभाषितम्

रयम् गदानीम् अन्त्यापि एकस्य स्वभाषितस्य अन्त्यासः कर्मः । भरतः गदानी स्वभाषितम् श्रुण्वन्तु ।

अयं निजः परोरिति गणना नघुचेतसाम् ।  
उदावचवितार्ना तु रसुदेर कर्तुं कर्म ॥



गदानी यत् स्वभाषितम् श्रेष्ठतः तस्य अर्थः एवम् अस्ति ।  
लोकै द्विरिधाः जनाः भवति । केचन् नग् मनस्काः । ते चिंतयति, एषः मम जनः । एषः मम  
जनः न । गति चिंतयति । अथ केचन् सति, महामोनामः । उदाव द्विताः । ते चिन्तयन्ति-  
जगत एव मम हृदयैः । नग् हृदयैः । तेषां दृष्ट्यासमग्रः प्रपथः एव मम हृदयैः । सज्जनाः  
एवं चिंतनं करति । धन्यादः ।

कथा

अहं गदानीम् एकं नगकथां रदामि ।

काशीः नगरे एकः महान् पण्डितः आसीत् । सः रूढि शिष्येण पारंगतः आसीत् । तस्य  
समीपे रूढिपुत्रः अध्यायनं करति स्म । तस्य ख्यातिः सर्वत्र प्रसारिता आसीत् । अतः दूव-  
दूवतः छात्राः आगच्छति स्म ।

एकदा कश्चन् शिष्यः तस्य समीपम् आगतवान् । सः गुरोः नमस्कारं प्रदाय पृष्ठान्-  
भरतः समीपे अध्यायनं कर्तुम् गच्छामि । अतः माम् शिष्याह्वनं स्वीकरोतु । गति सः उज्वरान् ।  
किंतुः सर्वेषाम् छात्राणां रूढि पवीर्णा प्रदाय एव तान् स्वीकरोति स्म । अतः एतस्य अपि रूढि  
पवीर्णा कर्तुम् सः एकं श्रेष्ठं पृष्ठान् । भोः रसेः । देवः हव अस्ति । गति पृष्ठान् ।  
तदा शिष्यः उज्वरान् । भगवन् । देवः हव नास्ति । सः सर्वेर्यापि अस्ति । गति ।  
प्रसन्नकपेण एव गवः पृष्ठान् । एतस्य उतवम् श्रेष्ठगवः अस्तु संतुष्टः जातः । सः हर्षेण  
तम् आनिश्रितवान् । तम् उज्वरान् अपि । भोः रसेः । भवान् रूढिमान् रौनकः अस्ति ।  
भरतम् अहं शिष्याह्वनं निश्चयेन स्वीकरोमि । सर्वं देवः सर्वेर्यापि अस्ति । गति तम् उज्वरान्,  
शिष्याह्वनं अर्पितवान् । एवं सः शिष्यः तत्रैव रिद्यान्तसं प्रतवान्, गुरोः आशीर्वादं प्राप्तवान् ।  
भरतः कथाम् अर्थः ज्ञातवतः किन् ।

शीतं स्नानम्

उदेति सूर्यः हृदयैः गायति ।  
प्रथमः उथेति प्रथमं रिकसति ।  
चटका रिचवति, आकाशि मन्त्र,  
शीतकाले जनं शीतं भवति,  
रानः उथेति स्नानं नह्,  
स्नानं प्रदा सा स्फुवति ।

(अन्वर्तते)



## 7. मिथिनाकना-चित्रकना(खगौं)

मौलक केव खविपन

मह्खक मिथिनामे बिराहक रौदक बिधि डैक जे रव- रधूमे म्महक सृजन कवरौक हेतु खड्डि । रव रधूकेँ दू खासन पव रैसा खीव खा' दही-चूड ाक पवसन जागत खड्डि । दूनु गोठेँ एकवा सानि खा' कौव रँना कय एक दोसव पव फेकैत छथि । पहिले फेकय रँना रिजयी होगत खड्डि । तीन दिन कोहरव घबमे खा' चतुर्थी दिन बनदेरताक घबमे ङा बिधि संपादित होगत खड्डि । नीचाँ देन खविपन दूनु थावीक नीचाँ रँनाउन जागत खड्डि ।

चित्र निर्माण- छोट-पेघ चाबि बृताकाव रेखा, सभसँ ङुपवका गौनाप चाक कात रिन्द । दूनुकेँ कमन-नानसँ जोड़न जागत खड्डि ।

चाक आश्रमक शिक्षा रव रधूकेँ प्रेम सूत्रसँ रौन्दिकेँ संतान सृष्टिक त्रान कवा कय एहि खविपन द्वारा कएन जागत खड्डि ।

(खन्नरतते)

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका १ फरबरी २००८ (वर्ष 1 मास 2 अंक 3)

बिदेह' पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह विदेह Videha बिदेह

<http://www.videha.co.in/>



मानुषीमिह संस्कृतम्



(अनुवर्तते)



## 8.संगीत-शिक्षा

1.

पहिले कमसँ कम 37 'की' रँना कीरौडि निय ।

एहिमे 12-12 ठाँक तीन भाग कक । 13 'था' 25 संख्या रँना की सा, 'था' साँ दूनूक रौध कवरैत  
थछि । सभसँ पाँचठाँ कारी 'था' सातठाँ उज्जव 'की' थछि । प्रथम 12 मंद सप्तक, रौदक 12 मध्य  
सप्तक 'था', सभसँ दहिन 12 ताव सप्तक कहरैछ । 1 सँ 36 धवि मार्कवसँ निथि निय । 1 'था'  
तेवह सँ फमशी: राम 'था' दहिन हाथ चनत ।

12 गोष्ट 'की' केव सेठमे 5 ठाँ कारी 'था' सात ठाँ उज्जव 'की' थछि ।

प्रथम अन्तसमे मात्र उजवा 'की' केव अन्तस कक ।

पहिन सात ठाँ उजवा 'की' सा, रे, ग, म, प, ध, नि, थछि 'था' आठम उजवा की तीव्र सं थछि  
जे अगूनका दोसव सेठक स थछि ।

राम हाथक अनामिकासँ स, माध्यामिकासँ रे, गर्डेकल हिंगवसँ सँ ग, रूँदरौ आँगुवसँ म, हेव रूँदरौ  
आँगुवक नीचाँसँ अनामिका आनु 'था' प, हेव माध्यामिकासँ ध, गर्डेकल हिंगवसँ नि, 'था' रूँदरौ आँगुवसँ  
साँ ।

दहिन हाथसँ 12 केवसेठ पव पहिन 'की' पव रूँदरौ आँगुवसँ स, गर्डेकल हिंगवसँ रे, माध्यामिकासँ ग,  
अनामिकासँ म, हेव अनामिकाक नीचाँसँ रूँदरौ आँगुवकेँ आनु 'था' तथ रूँदरौ आँगुवसँ प, गर्डेकल  
हिंगवसँ ध, माध्यामिकासँ नि 'था' अनामिकसँ साँ । दूनू हाथसँ साँ दोसव 12 केव सेठक पहिन  
उज्जव 'की' थछि । आरौहमे पहिन सेठक साँ थछि तँ दोसव सेठक प्रथम की बहरौक कावण  
साँ ।

दोसव गप जे की रौडिसँ जखन आरज निकनयतँ अपन कंठक आराजसँ एकव मिनान कक ।  
कनियो नीच-डूँच नहि होय । तेसव गप जे संगीतक रण थछि सा, रे, ग, म, प, ध, नि, साँ एकव  
देरनागरीक रण रूमरौक गनती नहि कवरै । आरौह 'था' अरौहमे कतेक नीच-डूँच होय  
तकरे ठाँ अ रौध कवरैत थछि । जेना कोनो आन धुनि जेनाकि क केँ निय 'था', की रौडि  
पव निकनन सा, रे...केव धुनिक अन्सव क धुनिक आरौह 'था' अरौह कक ।

(अन्वरत्ते)



## 9. रौनानाश्रुते-

### 2. महूखा घण्टराबिन

महूखा घण्टराबिन पबी जेकाँ सुन्दरि छनीह, जेना गूखन खाँठामे एक चूठकी केसब, झुदा सतरती छनीह । राँप गँजेबी शिवारी खाँ माय सतमाय, मैला महतारी, नजबि चोब । घबमे सतमायक बाज छन । सोनह रँवखक भय गेन बहथि झुदा हुनकब रियाहक चिंता ककरो नहि बहक । पवमान नदीक पवनका घाँठक मनाह प्रार्थना करैत छथि जे महूखाक नारकेँ किनाव नगाँ दियोक ।

साउन-भादरक, भवन धाव,  
कम रयसक महूखा नहि जाडु,  
एहि बाति खेरँय नेन नार ।

एहने साउन-भादरक बातिमे सतमाय घाँठ पब उतवन रणिक केँ तेन नगेरौक हेतु महूखाकेँ पठरँय चाहित छुँ, खाँ ओ' जाय नहि चाहित छुँ । अपन मायकेँ यादि करैत छुँ,

लोन चष्ठा केँ किए नहि मावनँह,  
पोसनँह एहि दिन खातिब ।



झुदा सतमाय साओन-भादरक वातिमे पथिककेँ घाँ पाव कबरौरय नैन महुँआकेँ पठाँ देनक । महुँआ रिदा भेनि आ' रीच बस्तामे अपन सखी-रहिनपा हूनमतीसँ भवि वाति गप करैत बहन । केहन माय अछि जे वातिमे घाँ पाव करैरक नैन कहैत अछि । माय अहो कहनक जे पथिक पागरना होय आ' रूँह होय तँ ओकवा तेन-मानिस कबरामे कोनो हर्ज नहि । ओकवा मोनमे जे होय तेन तँ ओ' पिते समान, ओकवा जेरूसँ चावि पाग निकानि नैन जाय, अहीमे रूँधियारी अछि । हूनमती कहनक- घरबायर नहि । जेनेने बहू प्रेमक आँगि , ओकवा नैन जे मोर्बंगमे आँगुव पव दिन गानि बहन अछि ।

मोर्बंगक नाम सुनि महुँआ उदास भय गेनि । ओ' हाग्नमे आयात ।

भोवहरा ओ' गामपव पहुँचन आ' माय दस राँत कहनकेँक । राँप नशामे आयन तँ माय ओकरो नात मावि भगा देनकेँक । तखने हबकावा आयन आ' मायक कानमे सुदेशे देनक । महुँआ मायकेँ कहनक जे अहाँ जे कहँ से हम कबरँ । रणिक क आदमी आयन छन, ओकवा संग महुँआ घाँ पव पहुँचन । रणिक दू सिपाहेक संग नारमे रैसन । महुँआ नार खेरँय नागनि । झुदा ओकवा नहि रूमन बहय जे ओकवा रैचि देन गेन छेक । सिपाही ओकवासँ पतरावि छीनि नैनक । सोदागव ओकवा कोवामे रैसरँय चाहनक, तँ ओ' छवपठाय नागनि । सिपाही कहनक जे सभठाँ पाग चूका देन गेन अछि, अहाँकेँ कोनो मँगनीमे नहि नय जा बहन छथि । महुँआ श्विभ भय गेनीह । ओ' सभ रूमनक जे महुँआ मानि गेन अछि । तखने महुँआ धावमे कुदि पड़नि । उलठाँ धावमे मोर्बंग दिशि निकनि जाय चाहनक महुँआ, जतय ओकव प्रेमी अछि, ओकवा नैन मात पानक नार नैन । सोदागवक छोटका सिपाही महुँआकेँ प्रेम कवय नागन छन, ओहो कुदि गेन कोशिकीक धावमे, दूनू डुरि गेन ।

अखनो साओन-भादरक धावमे कोनो घँरावकेँ कखनो देखा पड़ैत छेक महुँआ । कोनो थिसा रचनहावकेँ देखा जागत अछि ओ', आ' शुक भय जागत अछि , एकठाँ छनीह महुँआ घँराविन..... ।

-----





### 10. पञ्जी-श्रद्धा(खागाँ)

19 गोठ गौत्र खा 243 मून ग्राममे ऋथा मून 34 ठा निर्धारित कएन गेन। एहि 243 ग्रामसँ सेहो ३ सभ रिभिन्न ऋथ खा ग्राममे पसवनाह।

19 गोठ गौत्र निम्न प्रकारे ऋद्धि:

1. शौलिन्य
2. रसे
3. सारर्ष
4. काशुप
5. पवाशिव
6. भावद्वाज
7. कावयन
8. गङ्गा
9. कौशिक
10. खनायुकाङ्क
11. धन्यात्रेय
12. गौतम
13. मोदगना
14. रशिष्ठा
15. कौलिन्य
16. उपमन्यु
17. कपिन
18. रिङ्गुर्हि
19. तन्डी

ऋथा 34 मून सेहो तीन श्रेणीमे रिभङ्ग ऋद्धि।



श्रेष्ठी-प्रथम श्रेष्ठीमे 1. खड्गोरे, 2. खैथोखोड्डे, 3. बूधरौड्डे, 4. मड्डरे, 5. हविहरे, 6. घसोते, 7. थिसोते, 8. कमहे, 9. नबोले, 10. रमनियामे, 11. हविखन्ना, 12. सबिसरे, 13. सोदवपुबिये.

द्वितीय श्रेष्ठीमे 1. गगोनिराव, 2. पगोनिराव, 3. कजोनिराव, 4. खड्डरोव, 5. रहड्डि खान, 6. सकड्डि खान, 7. पनिराव, 8. रिसेराव, 9. हनेराव, 10. उँचितराव, 11. पड्डनराव, 12. कड्डेराव, 13. तिनैराव.

मध्यम मून- 1. दिग्दरे, 2. रैनेटे, 3. एकहरे, 4. पँचोते, 5. रनियामे, 6. जमजुखाने, 7. ठँकराने, 8. घड्ड ए.

श्रव

मैथिन ब्रौह्मणक मध्य 2 ब्रह्मक श्रव परिवार होगत अछि- त्रिश्रव आ पाँच श्रव। जाहि गोटक तीन गोट पूर्वज अगरेदक मूजक बचना कएन से त्रिश्रव आ जाहि गोटक पाँच गोट पूर्वज नोकनि अगरेदक मूजक बचना कएन से पाँच श्रव कहलैत छथि।

एहि प्रकारेँ गोटानुसारे श्रव निम्न प्रकारेँ भेन:-

त्रिश्रव- 1.शालिन्दा, 2.काथप,3. पवाशिव, 4. भावद्वाज, 5. कावायन, 6. कौशिक, 7. खनायुँकाष्क, 8. ध्रुग्यात्रेय, 9. गौतम, 10. मोदगना, 11. रशिष्ट, 12. कौलिन्दा, 13. उँपमनु, 14. कपिन, 15.रिङ्गुरुङ्गि,16. तन्डी।

पँचश्रव- 1. रसे, 2. सारर्पा, 3. गञ्ज।

श्रवक रिसुत रिरवण निम्न प्रकारेँ अछि-

1. शालिन्दा- शालिन्दा, अमित आ देरन.
2. रसे---] उँर, चरन,भाञ्जर,जामदगन्ध आ आप्लारन।
3. सारर्पा---] उँर, चरन,भाञ्जर,जामदगन्ध आ आप्लारन।
4. काथप-काथप, खरसोव आ नैद्युर.
5. पवाशिव-शङ्गि, रशिष्ट आ पवाशिव.
6. भावद्वाज-भावद्वाज, आगिबस आ रौसुँर.
7. कावायन-कावायन, रिङ्गु आ आगिबस.
8. गञ्ज-गार्पा, घृत, रेशेम्पायन, कौशिक आ माल्दर्याथरन।
9. कौशिक- कौशिक, अत्रि आ जमदग्नि.



10. खनायूकाम्-गञ्जा, गौतम आ रशिष्ठा.
11. प्रष्टात्रेय-प्रष्टात्रेय, आपन्नान आ सावन्नत.
12. गौतम-अर्गिवा, रशिष्ठा आ रार्हस्पत.
13. मोदगन्य-मोदगन्य, आर्गिबस आ रार्हस्पत.
14. रशिष्ठा-रशिष्ठा, अत्रि आ सार्प्रति.
15. कौलिन्य-आसुिक, कौशिक आ कौलिन्य.
16. उपमन्य-उपमन्य, आर्गिबस आ रार्हस्पत ।
17. कपिन-शौतातप, कौलिन्य आ कपिन.
18. रिग्ुरुष्मि-रिग्ुरुष्मि, कौवपुष्ठ आ व्रसदम्य
19. तल्डी-तल्डी, सार्था आ अर्गिबस.

एहिमे सार्र्ष आ रसेक पूरज एके छथि ताहि हेतु दू गोत्र हितो हिनका रीच रिवाह नहि होगत छन्हि । छानदोग्य आ राजमनेयक रैदिक हर्गिन उर्ध्विब रिभाजन एकव र्ग बहरै कएन, आ यत्रापरीत र्ग दनुक भिन्न-भिन्न अछि । हेव यत्रापरीतमे तीन प्ररव आकि पाँच प्ररव देन जाय ताहि हेतु उपबका सूचीक प्रयोग कएन जागछ ।

(अन्नरर्तते)

11. मिथिना आ संस्कृत- दविभन्नी संस्कृत रिन्निरिथानयक प्रार्सगिकता(आर्गा)



मिश्रजती नंपठ निकलैत छथि । ...जे जूखा खेनायरं आ' पांगना संगम ज़ाएह दृष्टी के संभावक साव  
बूमेत छथि । असज्जाति मिश्र पुष्टैत छथि जे के रादी आ' के प्रतिरादी । स्नातक उंत्तव दैत  
छथि-जे अभियोग कहरीक नेन हम रादी थिकहूँ आ' शुक्क देरीक हेतु संग्यासी प्रतिरादी  
थिकाह । रिश्नगव अपन शुक्कमे स्नातकक गाजाक पोष्टवी प्रस्तुत करैत छथि । रिदूषक  
असज्जाति मिश्रक कानमे अर्नगसेनाक यौनक प्रशंसा करैत छथि । असज्जाति मिश्र अर्नगसेनाके  
रीचमे बाथि दूक रँदना अपना पक्कमे निर्णय लैत छथि । एम्हव रिदूषक अर्नगसेनाक कानमे  
कहैत छथि, जे ज़ा संग्यासी दविद छथि, स्नातक आरावा छथि आ' ज़ा मिश्र मूर्थ तै हमवा संग  
बह । अर्नगसेना चाकक दिशि देखि रँजेछ , जे ज़ा तँ असने धूर्तसमागम भय गेन ।

रिश्नगव स्नातकक संग पुनः स्वतप्रियाक घब दिशि जागत छथि ।

एमहव मुननाशिक लोखा अर्नगसेनासँ सान भविक कमेनी मँगेछ । ओ' हुनका असज्जातिमिश्रक नग  
पठलैत छथि । मुननाशिक असज्जातिमिश्रके अर्नसेनाक रव बूमेत छथि । गाजा शुक्कमे नय  
असज्जाति मिश्रके गतानि कए राँहि तेना मानिषि करैत छथि जे ओ' रँहेशि भय जागत छथि ।  
ओ' हुनका ऋगन रूमि कय भागि जागत छथि ।

रिदूषक अरैत छथि, आ' हुनकव रँधन खोलैत छथि आ' पुष्टैत छथि जे हम अहाँक प्राणवक्का  
कएन छथि, आ' जे किछ आन प्रिय कार्य होय तँ से कछ । असज्जाति कहन जे छनसँ संपूर्ण  
देशके खएनहूँ, धूर्तवृत्तिसँ ज़ा प्रिया पाओन, सेहो अहाँ सन आज़ाकारी शिष्य पाओनक, एहिसँ प्रिय  
आरँ किछ नहि छथि । तथापि सरत्र स्वथशाति हो तकव कामना करैत छी ।

मिथिनामे संस्कृतक स्थिति-

मिथिना स्केत्रमे निम्न संस्थान करि ग्वक कानिदास संस्कृत रिश्नरिद्यानय, वामठेकसँ माण्यताक आरेदन  
कएन छथि । जेना रिहाव रिद्यानय पवीक्का समितिक असुरासुताक कावण केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा  
बोर्डक माण्यता प्राप्ति स्कूनक संख्या रँहन तहिना दवर्तगाक संस्कृत रिश्नरिद्यानयक असुरासुताक  
कावण नीक संस्थान सभ माण्यताक नेन राँहबक दिशि देखनक छथि ।

1.J.N.B. Sanskrit Vidyalaya Bihar Post Lagna (R.B.Pur) Vija-Lohna  
Road, Dist. Darbhanga

2.Laxmiharikant Sanskrit Prathamik, Madhyamik Vidyalaya, Post.  
Jhanjharpur Bazar, Dist. Madhubani,

3.Ajitkumar Mehta Sanskrit Shikshan Sansthan Post Ladora,  
Dist. Samastipur.

4.Dr.Mandanmishra Sanskrit Mahavidyalaya, Post Sanjhat,  
Dist. Begusarai

5.Saraswati Adarsha Sanskrit Mahavidyalaya, Begusarai

6.Dr.RMAdarsha Sanskrit Mahavidyalaya, P.O. Malighat, Mujaffarpur



एकव अतिविज्ञ बाष्प्रीय संस्कृत संस्थान, नञा दिन्नी निम्न रिद्यानय सभकेँ खाँटि दय जरीरित बखने अछि ।

1.J.N.B. Adar sh Sanskrit Mahavi dyal aya, PO Lagra, Vi a – Lohna Road, Di st t – Dar bhanga.

2.Laxmi Devi Saraf Adar sh Sanskrit Mahavi dyal aya, Kali Rekha, Di st t – Deoghar .

3.Raj kumar i Ganesh Shar ma Sanskrit Vi dyapeet ha, Kol ahnt a Pat ori ,Di st t – Dar bhanga

4.Ranj i Meht a Adar sh Sanskrit Mahavi dyal aya.Mal i ghat , Muzaf far pur .

एहिमे नगमाक रिद्यानय करिहनखक कानिदास संस्कृत रिन्निरिद्यानय सँ मागता मँगनक अछि, कियेकतँ दबभंगक रि.रि. मे एहि तबहक कोनो पबियोजनाक सरथा अन्तार अछि ।

तीस र्ष पहिले हिन्दीमे डा. वामप्रकाशि शिन्मा निखित मिथिनाक गतिहास सेहो प्रकाशित भेन बहय । खाजूक दिन नहि तँ एकवा अपन रेसगाँठ छेक नहिये दूब शिम्माक कोनो पबियोजना ।

(अन्वरतते)

## 12.भाषा खाँ शीघ्रागिकी(कंप्यूटर,डायार्कन,कीरौर्ड/ठकणक तकनीक)

देरनागबीमे ठाँगप कबरौक हेतु पछिना अकमे देन साँखठरेयवक अतिविज्ञ एकठाँ खाँव ठूँन अछि जे नमनिखित निँक पब उपनछ्छ अछि । एकव रिशेषता अछि एकव संस्कृत की-रौर्ड जे खान कोनो साँखठरेयव पब उपनछ्छ नहि अछि । एहिमे उँदात,खन्नदात केव खाँ किछु खान संस्कृतक अस्खव उपनछ्छ अछि । एकव रँवाह दागरेकठ खाँदि कप सेहो अछि, ऋदा जेँ कोनो रिशेष प्रयोजन नहि हो तँ मात्र रँवाह खाँग.एम.ञा केव प्रयोग मात्र कबी ।

सं , सँ , सँ , सँ के स निखनाक रौद सिखठ ३,२,४ खाँ १ दरँनासँ निखि सकैत छी ।

[ht t p://www.baraha.com/BarahalME.htm](http://www.baraha.com/BarahalME.htm)

तिवहता निपि निखरौक हेतु एहि निँक पब जाँडु ।

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका १ फरबरी २००८ (वर्ष 1 मास 2 अंक 3)

विदेह' पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e Magazine विदेह विदेह Videha विदेह



<http://www.videha.co.in/>

मानुषीमिह संस्कृतम्

<http://www.tirhutalipi.in.com/>

ऋदा एकवा हेतु खली निंक पव जे शीति फॉन्ट टैक तकवा सेहो डाउनलोड कवी था, दनु के हार्डडिस्क ड्रागर C/windows/fonts मे पेसठ्ट कए दिय। एहिमे जे फॉन्ट खड्डि से Ascii मे खड्डि। फूतदेर, शुशा ग्रा सभ फॉन्ट सेहो एहि तबहक खड्डि, पहिले उपयोगी छन ऋदा खरि सर्च गजिनमे यूनिकोड-यू.पी.एफ.8 केव सर्च होगत टैक था Ascii मे निखन देरनागरीक सर्च नहि भय परैत खड्डि। रिन्डोजमे मंगन फॉन्ट खरैत टैक, था, एहिमे निखन देरनागरी सर्च भय जागत खड्डि। मिथिनास्करक यूनिकोड कपक खारेदन (खशुमन पाल्दय द्वावा देन गेन) नरित खड्डि।

(खनुरतते)



### 13. बचना निखरौ सँ पहिले... खागाँ)

।।.

पछिना र्वेव मात्रिक ङुदक जानकावी नेने छुनहुँ । खाँ रार्षिक ङुद पव खाँरी ।  
पहिले छुन्दः शिम्त्रमे प्रहाङ्ग 'ग्वक' खाँ 'नघ्' ङुदक पविचय प्राप्त कक ।  
तेबह ठाँ स्रव रर्षिमे ख, ग, ङ, ङ, नू ङा पाँच ह्, स्र खव खाँ, ङ, ङ, ङ, ए, ए, उ, उ, ङा खाँठी दीर्घ स्रव  
खछि ।

ङा स्रव रर्षि जखन राँजन रर्षिक संग जूझि जागत खछि तँ ओकवासँ 'ग्वशिताम्बव' रनेत खछि ।  
क+ख= क,  
क+खा=का ।

एक स्रव मात्र खाँकि एक ग्वशिताम्बवकेँ एक 'खम्बव' कहन जागत खछि ।  
कोनो राँजन मात्रकेँ खम्बव नहि मानन जागत खछि- जेना 'खराक' शिद्धमे दू ठाँ खम्बव खछि,  
ख , रा ।

1. सभठौ द्रस्र स्रव खाँ द्रस्र हाङ्ग ग्वशिताम्बव 'नघ्' मानन जागत खछि । एकवा ङुपव U  
निधि एकव संकेत देन जागत खछि ।
2. सभठौ दीर्घ स्रव खव दीर्घ स्रव हाङ्ग ग्वशिताम्बव 'ग्वक' मानन जागत खछि, खाँ एकव  
संकेत खछि , ङुपवमे एकठाँ छोट - ।
3. खनस्राव किंरा रिसग्राहाङ्ग सभ खम्बव ग्वक मानन जागत खछि ।
4. कोनो खम्बवक रौद स्रहाङ्गखम्बव किंरा राँजन मात्र बहनासँ ओहि खम्बवकेँ ग्वक मानन  
जागत खछि ।  
जेना- ख्छ, सव । एहिमे ख खाँ स दू ग्वक खछि ।
5. (खन्ररतते)



14. ख्रतमे श्ररासी येथिनक हेतु ख्रजेजीमे

VI DEHA M TH I LA TI RBHUKTI TI RHUT(ख्रगौ)

Siradhvaj a is a famous king of Videha for several reasons. His adopted daughter, Sita, was married to Rama. Ramayana is devoted to this important event of the alliance between the Ikshvakus and the Videhas. The story is narrated by the Mahabharata also. The Great Epic does not call him Siradhvaj a, but Vi deharaj a and Janaka. His great fame and scholarship misled Bhavahhuti, the celebrated Sanskrit dramatist of a much later period, who confused him for the Vedic Janaka. Siradhvaj a was also a good fighter. Thus he specialised in the arts of war as in those of peace. Siradhvaj a had one son - Bhanumat - one adopted daughter, Sita, and one daughter Urmila. His brother Kushadhvaj a had two daughters - Mandavi and Srutakirti. Siradhvaj a ascended the throne after his father Hrasvaroman left for the forest. He kept his younger brother under his special care. Once while Siradhvaj a was ploughing the mead, there arose a damsel and as he obtained her while furrowing the field for sacrifice, she came to be known by the name of Sita, arising from the earth she grew as his daughter. The greater part of her education was post-marital, and most likely influenced by her husband and by the special environments of her long periods of exile from court. Yet the first nine or ten years of Sita's life were not left blank. She was certainly literate. The script she learnt was perhaps pictographic. She knew three languages, at least two of which were begun in her childhood. Besides studying many





branches of learning, she had a lot of instruction from her mother and other relatives about wifely duties. A valuable and attractive possession of Siradhvaja was a bow of Siva which his ancestor Devarata had received as a trust from the gods. These two Sita and the bow became sources of his friction with contemporary kings. The Buddhist reference that makes Rama brother and husband of Sita is historically right, the origin of the modified version discloses itself in Sita's appellation janakaduhita. The proper name Janaka was a very easy one, and had the merit of supplying a plausible and honourable connection for the subsequently deified tribal hero, while removing the objectionable feature smoothly. Sh.S.C.sarkar opines that Siradhvaja may have been hit upon as a suitable Janaka for the Janaka-duhita, because of the connection between 'Sita' and 'Sira'. Another suggestion made by the same scholar twenty years later is that Sita was Vedavati's illegitimate, abandoned child, found and adopted by her Vedavati's generous uncle, Siradhvaja. Siradhvaja vowed that he would give his daughter only to him who would be able to string the bow. The kings, who failed to do this laid siege to Mthila and oppressed the town. This went on for a year. Much of the wealth of Siradhvaja was uselessly spoiled. Later he made exertions, received a four-limbed army and defeated the kings who fled away with their ministers. But the troubles were not over with this episode. Sudhanvan, king of **Sanki sa** invaded Mthila and demanded the bow of Siva as well as the beautiful Sita. He was resisted and ultimately defeated. Sudhanvan was killed in battle. **Sanki sa** became an appendage to Videha. A branch dynasty was established there with his younger brother Kusadhvaja as the king of the territory. Siradhvaja then announced the performance of a ceremony regarding the bow. Visvamitra, who had brought two sons of king Dasaratha of Ayodhya to have his Ashrama area in South Bihar cleared of Rakshasas, heard of this and the party decided to see this ceremony for themselves. The Ramayana of Valmiki furnishes us with certain clues which enable us to trace the route of the party consisting of Vishvamitra, Rama and Lakshmana from Ayodhya to Siddhasrama, modern Sahasram and from there to the capital of Videha. The marriage of Rama and Sita was performed on the twentyfifth day of the journey from Ayodhya. The fifth day of the bright fortnight of the month of MargaShirsha is



universally regarded as the date of the marriage of Rama and Sita. The journey began on the eleventh day of the bright half of the month of Kartika. But it is stated that on the eleventh day of the journey the moon was visible after midnight. So it was probably the eighth day of a dark fortnight. The two dates will disappear and two other dates will be repeated, one of the disappeared dates falling after the fifth day of the bright half of Margashirsha in which period we are not interested. Such a phenomenon is very common in the Hindu calendar in which two dates disappears and two other dates gets repeated. The party travelled for half a yojana from Ayodhya and in the night on the bank of the Sarayu. They reached the confluence of the Sarayu and the Ganges and spent the night there. They crossed the confluence and came to the southern shore of the Ganges. Taraka, the wife of Sunda, was killed. They reached the Siddhashrama which was near a hill, and preparations for the sacrifice began. The night was passed there guarding the Ashrama. The sacrifice lasted for six days. On the last day of the sacrifice the invading Rakshasas were killed. The night was passed there. Now that the sacrifice was over, they wanted to visit Mithila. The bow of Shiva was kept there. So they started from the Siddhashrama and travelled till the evening. They halted on the Sopa's distant shore. When the sage was telling tales to the princes it was past midnight and the moon was rising forth. So perhaps it was the eighth day of a dark fortnight. It was the eighth day of the dark fortnight of Margashirsha. Then they reached the southern shore of the Ganges where the night was passed. They crossed the Ganges and reached the northern shore. While sitting on the bank of the Ganges they saw a big city. Soon they went to Vaisali. They accepted the hospitality of king Somali of Vaisali and passed the night there. The party reached Vaisali on the tenth day of the dark fortnight of Margashirsha. They left Vaisali and proceeded towards Mithila. They halted at the ashrama of Gautama, where Ahalya was rescued. They then reached the place of sacrifice, which was at some distance from Mithila. Vardhamana Mahavira, the twenty fourth Tirthankara of the Jainas, left his home for asceticism on the tenth day of the dark fortnight of Margashirsha. Thus Vardhamana's renunciation of the world on a date associated with the visit of Rama to Vaisali assumes



double significance which has so far escaped notice. Then it was stated there by Janaka that now there were only twelve days to complete the sacrifice. The bow was shown and its history explained. It was broken by Rama. Messengers were sent immediately to Ayodhya on very swift conveyances. The messengers passed three nights on the way. The messengers reached Ayodhya and king Dasaratha was informed. He decided to start next day. The night was passed at Ayodhya. The party of Dasaratha started for Mithila. Four days were passed on the way.

The party arrived at Mithila where the night was passed. Kusadhvaaja was brought from Sankasya. The marriages of the daughters of Siradhvaaja and Kusadhvaaja took place on the fifth day of the bright fortnight of Margasirsha. The party of Dasaratha went back to Ayodhya thus the matrimonial alliance between the two most important houses of the Ikshvakus in North India was accomplished. The reign of Siradhvaaja seems to have marked a further advance in the consolidation of the Videhan territory. Dhanusha, a place in Nepal, now overgrown into jungle, six miles away from Janakpur, is believed to be the place where the bow of Siva was broken by Rama. A bow is still shown there in mark the memory of that great event. Some parts of the Champaran District were brought under his control. Local tradition says that king Janak lived at Chankigarh, locally known as Jankigarh, eleven miles north of Lauriya Nandangarh. The name Janaki suggests that this Janaka may have been Janaki's father Siradhvaaja, who otherwise too is known as a valiant prince. The Mahabharata speaks of a battle between king Janaka Mithila and king Pratardana. The Ramayana makes one Pratardana king of Kasi and a contemporary of Rama. A more famous Pratardana of Kasi flourished 24 steps earlier. Sankasya was a well defended city. Its ramparts were ranged round with pointed weapons. It appears that the messengers of Siradhvaaja Janaka went to Sankisa and brought Kusadhvaaja to Mithila the same day, it was near Videha probably somewhat near its border. Sankisa was situated on the Ikshumati river. This river is known to the Puranas also, as on its bank was the hermitage of Kapila. It is also mentioned at another place in the Ramayana. The Ikshu is the name of three rivers in the Puranas, while there are also rivers known as Ikshuda and Ikshula. Thus there might be another Ikshumati river at this place or it may



simply mean a river in the sugarcane producing area. The Sankasya kingdom was near some mountain or forest, as a later king of this place visited his cousin in the forest. There was no intervening territory between Videha and Sankasya otherwise the Sankasya king would have been prevented from carrying out a raid against Mithila. A quick messenger from Mithila went to Sankasya and came back the same day, the distance was comparatively shorter. It was a well-defended city and a seat of government. One such place near the Gandak or the Kosi might be Sankasya. Jankigarh (also called Chankigarh) in Champaran district may be a probable site for this purpose. The genealogy of the Sankasya branch of the Janakas is given by three Puranas and is as follows: Kusadhvaja, Dharadhvaja and Mtadhvaja. Kusadhvaja was the younger brother of Siradhvaja. There was good relation between the two brothers. When Sudhanvan, the king of Sankasya, invaded Mithila and was slain in battle, Siradhvaja installed his younger brother on the throne of Sankasya. This event did not happen long before the marriage of Sita, because while invading Mithila Sudhanvan had demanded Shiva's bow and lotus-eyed Sita. After the party of Dasaratha had arrived at Mithila, Janaka sent messengers to Kusadhvaja at Sankasya to bring him to the Videhan capital. Kusadhvaja came immediately and being in charge of the sacrifices took active part in the performance of the marriages. Sita and Urmila, the daughters of Siradhvaja, were married to Rama and Lakshmana respectively. Mandavi and Srutakirti, the two daughters of Kusadhvaja, were married to Bharata and Satrughna respectively. Thus the four daughters of Mithila were married to the four sons of Dasaratha amidst great festivities. The Ramayana knows of a girl named Vedavati, daughter of Kusadhvaja, who was molested by Ravana. Thereupon she mortified herself by cutting off her hair and immolated herself on a pyre. S. C. Sarkar regards this Vedavati as the daughter of Kusadhvaja, the younger brother of Siradhvaja of Mithila, which is not tenable because Kusadhvaja, father of Vedavati, is never called a Maithila but had been called a Brahmarshi and a son of Brihaspati. Kusadhvaja, father of Vedavati, was killed by Sambhu, king of the Daityas. Later Vedavati, having been molested by Ravana, burnt herself to be reborn as Sita. Thus Kusadhvaja was dead before the birth of



Sita. How could then he be installed on the throne of Sairkabya and take part in the marriage ceremony of Sita, Urmila and his two daughters? Vedavati is stated to have flourished in the Krita Yuga, while Kushadhvaja of Mthila flourished in the Treta age. Vedavati is said to have been reborn in the Maithila kula now, hinting thereby that while Vedavati she belonged to some other family. Siradhvaja and Kushadhvaja never mention Vedavati's name in any connection. The Brahmavai varta Purana which gives in detail the story of Kusadhvaja's daughter Vedavati being ravished by Ravana. There Kushadhvaja is not the younger brother of Siradhvaja, king of Mthila, but quite a different personality. It is stated there that in the Krita age there was Hansadhvaja who had two sons Dharmadhvaja and Kushadhvaja. The latter's wife was Malavati who gave birth to Vedavati. Vedavati in her youth was molested by Ravana. She was reborn as Sita. Bhanumat was the son of Siradhvaja and the brother of Sita and Urmila. He is called a Maithila by puranas and did not belong to the Sankasya line but to the Mthila one. S. C. Sarkar makes an original suggestion with regard to Bhanumat. He says that Hanumant of later legends is an amalgam of two elements—Bhanu—mant, son and successor of Siradhvaja, at Mthila, prime assister in the rescue of Sita and Au—manti, a Dravidian deity. The name meaning the male monkey, vedic Vrisha Kapi. He is called Satadyuma by some Puranas and Pradyuma by some other Puranas. In two Mahabharata lists of royal munificence to Brahmanas it is said king Satadyuma gave a splendid furnished house to the Brahmana Maudgalya, descendant of king Mudgala of North Panchala. The only Satadyuma mentioned was a king of Videha, Siradhvaja's second successor. Hence although his territory is not indicated, this Satadyuma appears to be the same as Siradhvaja's second successor. The Bhagavata and the Vishnu, the Vayu, the Brahmānda and the Garuda parunas deals with Janaka dynasty all the pre Bharata war dynasties. Arishtanemi is also called Adhinenika. The second part of his name, Nemi, i.e., Nimi dynasty to which he belonged. The MahaJanaka II of the Jataka and Nami of the Jaina Uttaradhyayana do not care for the burning of the palaces of Mthila the mention of Nemi in juxtaposition with Arishta in the Vishnu Purana— Nami or Nemi with MahaJanaka II, whom the Jataka



represents as the son of Arittha. Arishta Nemi Janaka of the Purana, MahaJanaka II –son of Arittha Janaka– of the Jataka and Nami of the Jaina Uttaradhyayana are identical. Maha Janaka II and Nami of the Uttaradhyayana Sutra belong to the era posterior to the Bharata War. MahaJanaka II, being son of Arittha was Arishta and not Arishta Nemi. One Kshemadarsin, a prince of Kosala, was advised by Kalakavrikshiya to take help from Janaka of Mthila for recovering his kingdom. The king of Videha, on the recommendation of the sage, accepted Kshemadarsin, honoured him and gave him his own daughter and various kinds of gems and jewels. Kshemadarsin recovered his kingdom and made Kalakavrikshiya his priest who performed many sacrifices for the king. Upagupta or Uragupta was Ugrasena Janaka Aindradyumi of Videha at whose court Ashtavakra, son of Kahoda and Sujata, daughter of Uddalaka Aruni, defeated the Suta scholar Vandin and consequently relieved his father after twelve years of confinement. The probability is that Upagupta (or Uragupta) and Ugrasena were one and the same person and that he was ruling at one of the two principalities into which Videha was divided between the two branch dynasties that issued from Kuni. In the same way, Sankasya was divided between Kesadhvaja and Khandikya. But Ugrasena Aindradyuni, a contemporary of Ashtavakra, Uddalaka's daughter's son, flourished after the Bharata War, while Upagupta of the Puranas, far removed from Bahulasva, a contemporary of Krishna, flourished much before the War. The Mahavamsa furnishes a list of twentyeight early kings and says that these twentyeight princes dwelt in Kusavati, Rajagriha and Mthila. The Dipavamsa also gives an identical list and says that these were twentyeight kings by number – in Kusavati, in Rajagriha and in Mthila. The rulers belonged to the pre Bharata Age.

(to be continued)